CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2016 with Solution PDF-Set 2/2/1

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक: 103**

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 14 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 8, 9, 11 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. मुक्त बाज़ार की अर्थव्यवस्था ने जहाँ एक ओर शिक्षा और रोज़गार के लिए अनेक अवसर प्रदान किए हैं वहीं हिंदी भाषा के लिए भी। बाज़ार में अधिसंख्य उपभोक्ता चूँकि हिंदी भाषी हैं इसलिए उत्पाद-विपणन, व्यापार और विज्ञापन के लिए हिंदी की आवश्यकता है। देश में भी हिंदी का चलन बढ़ा है। निहित राजनीतिज्ञ स्वार्थों को किनारे कर दें तो हिंदी का प्रचार-प्रसार बढ़ रहा है। हिंदीतर भाषा-भाषी राज्यों, विशेषकर दक्षिण के राज्यों के प्रमुख नगरों में हिंदी प्रसार का एक कारक 'मार्केट' से हिंदी का जुड़ाव भी है। हिंदी का कारवाँ भारत में ही नहीं, विदेशों में भी बढ़ रहा है। दुबई, रूस और ब्रिटेन में तो पहले से ही हिंदी अनजान भाषा नहीं थी; आज अमेरिका, यूरोप, दक्षिण-पूर्व एशिया, दक्षिण अफ्रीका आदि में भी हिंदी व्यवहार में आ रही है। जिन देशों में साम्राज्यवादी दिनों में भारतीय मज़दूर ले जाए गए थे वे आज भी भारतीय मूल का होने पर गर्व करते हैं और हिंदी को पूरे उत्साह के साथ अपनाए हुए हैं। उनमें मॉरिशस, फिज़ी, ट्रिनीडाड, सूरिनाम जैसे देश हैं। वहाँ हिंदी बाज़ार की ही भाषा नहीं, साहित्य और पत्रकारिता की भाषा भी है। उनकी पीड़ा ये है कि भारत ने अपने भारतवंशियों को भुला दिया है। ये लोग बँधुआ मज़दूर के रूप में ले जाए गए थे परंतु आज हमारे सांस्कृतिक दूत हैं। यह ऐसे ही है जैसे हज़ारों वर्ष पूर्व हमारे ऋषियों ने या बाद में बौद्धभिक्षुओं ने समुद्रों, पर्वतों को लाँघकर भारतीयता का प्रचार किया था। भारत हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की भाषा बनाने के लिए प्रतिबद्ध है तो उसके साथ यह दायित्व भी उसी का है कि विश्वभर में बिखरे हिंदी भाषियों को बौद्धिक और संसाधनों से समर्थन प्रदान करे। [15 अंक]

1(क). उपर्युक्त अनुच्छेद का एक शीर्षक दीजिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अनुच्छेद का शीर्षक उसके केंद्रीय विषय को संक्षेप में व्यक्त करता है।
- गद्यांश की सीमा में रहकर उत्तर दें; बाहर की ऐतिहासिक या राजनीतिक जानकारी न जोड़ें।

चरण 1: अनुच्छेद के केंद्रीय विषय को पहचानें लेखक मुक्त बाज़ार से हिंदी के बढ़ते उपयोग, देश और विदेश में उसके प्रसार तथा प्रवासी भारतीयों के योगदान की चर्चा करता है। इसलिए शीर्षक में हिंदी के बढ़ते विस्तार का संकेत आना चाहिए।

चरण 2: उपयुक्त शीर्षक चुनें केवल व्यापार या केवल प्रवासी मज़दूरों पर आधारित शीर्षक अनुच्छेद के पूरे आशय को नहीं समेटेगा। हिंदी का वैश्विक प्रसार ऐसा विषय है जिसमें बाज़ार की भूमिका और विदेशों में हिंदी की सांस्कृतिक उपस्थिति, दोनों आ जाते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष उपयुक्त शीर्षक है – हिंदी का वैश्विक प्रसार।

त्वरित सुझाव: शीर्षक चुनते समय अनुच्छेद के आरंभ और अंत को जोड़कर उसका साझा केंद्रीय विषय लिखें।

1(ख). मुक्त बाज़ार के किन लाभों का उल्लेख किया गया है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर में मुक्त बाज़ार के बताए गए सभी प्रमुख लाभों को गद्यांश से चुनना है।
- गद्यांश की सीमा में रहकर उत्तर दें; बाहर की ऐतिहासिक या राजनीतिक जानकारी न जोड़ें।

चरण 1: आरंभिक कथन से लाभ पहचानें अनुच्छेद की शुरुआत में स्पष्ट है कि मुक्त बाज़ार की अर्थव्यवस्था ने शिक्षा और रोज़गार के अनेक अवसर प्रदान किए हैं। ये उसके सामाजिक और आर्थिक लाभ हैं। प्रश्न में बहुवचन में लाभ पूछे गए हैं, इसलिए उत्तर को केवल हिंदी के प्रसार तक सीमित नहीं रखना चाहिए।

चरण 2: भाषा संबंधी लाभ जोड़ें मुक्त बाज़ार ने हिंदी भाषा के लिए भी नए अवसर पैदा किए हैं। अधिकांश उपभोक्ताओं के हिंदी भाषी होने के कारण उत्पाद-विपणन, व्यापार और विज्ञापन में हिंदी का उपयोग बढ़ा है। इस व्यावहारिक आवश्यकता ने हिंदी के प्रचार-प्रसार को गति दी है। ये बातें अनुच्छेद में दिए हुए कारणों और परिणामों पर आधारित हैं।

चरण 3: निष्कर्ष मुक्त बाज़ार से शिक्षा और रोज़गार के नए अवसर मिले हैं तथा उत्पाद-विपणन, व्यापार और विज्ञापन में हिंदी की आवश्यकता और उसका प्रसार बढ़ा है।

त्वरित सुझाव: लाभ पूछे जाने पर शिक्षा, रोज़गार और हिंदी के बढ़ते उपयोग – तीनों को शामिल करें।

1(ग). मुक्त बाज़ार से हिंदी को क्या लाभ हुआ है? क्यों? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न के दोनों हिस्सों में हिंदी को हुआ लाभ और उसका कारण अलग-अलग स्पष्ट करना है।
- गद्यांश की सीमा में रहकर उत्तर दें; बाहर की ऐतिहासिक या राजनीतिक जानकारी न जोड़ें।

चरण 1: हिंदी को हुआ लाभ बताएँ मुक्त बाज़ार के कारण हिंदी का व्यावहारिक उपयोग और प्रचार-प्रसार बढ़ा है। उत्पाद-विपणन, व्यापार तथा विज्ञापन में उसकी आवश्यकता अनुभव की जाने लगी है। इस प्रकार हिंदी को व्यापक उपभोक्ता समुदाय से संवाद स्थापित करने की भाषा के रूप में नए अवसर मिले हैं। यही अनुच्छेद में हिंदी को हुआ लाभ है।

चरण 2: उपभोक्ताओं से संबंध स्पष्ट करें इस लाभ का कारण यह है कि बाज़ार के अधिसंख्य उपभोक्ता हिंदी भाषी हैं। उनसे उनकी भाषा में संपर्क करने के लिए व्यापार और विज्ञापन में हिंदी की ज़रूरत पड़ती है। इसलिए बाज़ार से जुड़ाव ने हिंदी के उपयोग का क्षेत्र बढ़ाया है। उत्तर में लाभ के साथ यह उपभोक्ता संबंधी कारण देना आवश्यक है।

चरण 3: निष्कर्ष मुक्त बाज़ार से हिंदी का उपयोग और प्रसार बढ़ा है, क्योंकि अधिकांश उपभोक्ता हिंदी भाषी हैं और उनसे जुड़ने के लिए विपणन, व्यापार तथा विज्ञापन में हिंदी की आवश्यकता होती है।

त्वरित सुझाव: क्या लाभ और क्यों – इन दोनों प्रश्नों के लिए क्रमशः परिणाम और उसका कारण लिखें।

1(घ). दक्षिण भारत में हिंदी की क्या स्थिति है? क्यों? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- दक्षिण भारत में हिंदी की स्थिति का उत्तर अनुच्छेद में बताए गए प्रमुख नगरों तक केंद्रित रखना है।
- गद्यांश की सीमा में रहकर उत्तर दें; बाहर की ऐतिहासिक या राजनीतिक जानकारी न जोड़ें।

चरण 1: दक्षिण भारत की स्थिति बताएँ अनुच्छेद के अनुसार हिंदीतर भाषा-भाषी राज्यों में हिंदी का प्रचार-प्रसार बढ़ रहा है। विशेष रूप से दक्षिण के राज्यों के प्रमुख नगरों में हिंदी के प्रसार का उल्लेख है। इसलिए स्थिति बताते समय यही लिखना उचित है कि वहाँ हिंदी का चलन बढ़ रहा है; पूरे दक्षिण भारत की भाषा बदल जाने जैसा कोई दावा नहीं करना चाहिए।

चरण 2: बाज़ार से जुड़ाव का कारण समझाएँ प्रमुख नगरों में हिंदी के बढ़ते प्रसार का एक कारण उसका बाज़ार से जुड़ना है। व्यापार, विपणन और विज्ञापन में हिंदी भाषी उपभोक्ताओं तक पहुँचने के लिए हिंदी की आवश्यकता होती है। इस व्यावहारिक उपयोग से दक्षिण के हिंदीतर भाषी क्षेत्रों में भी उसका विस्तार हुआ है। यह कारण सीधे अनुच्छेद के कथन से मिलता है।

चरण 3: निष्कर्ष दक्षिण भारत के प्रमुख नगरों में हिंदी का चलन और प्रसार बढ़ रहा है। इसका एक प्रमुख कारण हिंदी का बाज़ार, व्यापार और विज्ञापन से जुड़ना है।

त्वरित सुझाव: स्थिति लिखते समय प्रमुख नगरों का उल्लेख करें और कारण में बाज़ार से जुड़ाव बताएँ।

1(ङ). साम्राज्यवादी दौर में भारतीय विदेशों में क्यों और कहाँ-कहाँ ले जाए गए? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न में विदेश ले जाए जाने का उद्देश्य और देशों के नाम, दोनों अपेक्षित हैं।
- गद्यांश की सीमा में रहकर उत्तर दें; बाहर की ऐतिहासिक या राजनीतिक जानकारी न जोड़ें।

चरण 1: ले जाए जाने का उद्देश्य बताएँ अनुच्छेद में बताया गया है कि साम्राज्यवादी दिनों में भारतीयों को मज़दूरों के रूप में विदेश ले जाया गया था। आगे उन्हें बँधुआ मज़दूर कहा गया है। इसलिए उद्देश्य यह था कि उनसे बँधुआ मज़दूर के रूप में श्रम करवाया जाए। इसे वर्तमान समय के स्वैच्छिक रोजगार या व्यापारिक प्रवास से नहीं मिलाना चाहिए।

चरण 2: गद्यांश में दिए देशों के नाम चुनें ऐसे भारतीय मूल के लोगों के संदर्भ में मॉरिशस, फिज़ी, ट्रिनीडाड और सूरिनाम का उल्लेख है। अनुच्छेद में अन्य देशों का नाम भी हिंदी के वर्तमान व्यवहार के संदर्भ में आता है, पर इस प्रश्न के लिए वे नाम नहीं चुनने चाहिए। यहाँ वही चार देश अपेक्षित हैं जिनका संबंध पुराने मज़दूर प्रवास से जोड़ा गया है।

चरण 3: निष्कर्ष साम्राज्यवादी दौर में भारतीयों को बँधुआ मज़दूरों के रूप में काम कराने के लिए मॉरिशस, फिज़ी, ट्रिनीडाड और सूरिनाम ले जाया गया था।

त्वरित सुझाव: देशों के नाम लिखते समय मज़दूर प्रवास वाले वाक्य से नाम लें, हिंदी के वर्तमान प्रसार वाली सूची से नहीं।

1(च). उन प्रवासियों की पीड़ा क्या है और कहाँ तक ठीक है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रवासियों की शिकायत और उसकी उचितता का उत्तर गद्यांश में उनके सांस्कृतिक योगदान से जोड़ना है।
- गद्यांश की सीमा में रहकर उत्तर दें; बाहर की ऐतिहासिक या राजनीतिक जानकारी न जोड़ें।

चरण 1: प्रवासियों की पीड़ा पहचानें प्रवासियों की पीड़ा यह है कि भारत ने अपने भारतवंशियों को भुला दिया है। वे भारतीय मूल का होने पर गर्व करते हैं और हिंदी को उत्साह से अपनाए हुए हैं, फिर भी उन्हें अपने मूल देश से अपेक्षित अपनापन और सहयोग न मिलने का दुख है। यह शिकायत गद्यांश में सीधे व्यक्त की गई है।

चरण 2: पीड़ा की उचितता स्पष्ट करें उनकी पीड़ा उचित है, क्योंकि विदेश में रहते हुए भी वे हिंदी, साहित्य, पत्रकारिता तथा भारतीय संस्कृति को जीवित रखे हुए हैं। लेखक उन्हें भारत के सांस्कृतिक दूत कहता है। ऐसे लोगों को बौद्धिक और संसाधन संबंधी समर्थन देना भारत का दायित्व बताया गया है। इसी योगदान और दायित्व के आधार पर उनकी अपेक्षा न्यायसंगत है।

चरण 3: निष्कर्ष प्रवासियों को दुख है कि भारत ने उन्हें भुला दिया है। उनकी पीड़ा उचित है, क्योंकि वे विदेशों में हिंदी और भारतीय संस्कृति का प्रसार करते हैं तथा भारत से सहयोग और आत्मीयता की अपेक्षा रखते हैं।

त्वरित सुझाव: पीड़ा के बाद उचितता का आधार भी दें – हिंदी-संस्कृति का संरक्षण और भारत का सहयोग देने का दायित्व।

1(छ). "वे बँधुआ मज़दूर आज भारत के सांस्कृतिक दूत हैं" – आशय स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सांस्कृतिक दूत का आशय विदेश में भारतीय भाषा और संस्कृति के प्रतिनिधि तथा प्रचारक से है।
- गद्यांश की सीमा में रहकर उत्तर दें; बाहर की ऐतिहासिक या राजनीतिक जानकारी न जोड़ें।

चरण 1: ऐतिहासिक स्थिति और वर्तमान योगदान जोड़ें जिन भारतीयों को साम्राज्यवादी समय में बँधुआ मज़दूर बनाकर विदेश ले जाया गया था, उनके समुदाय आज भी भारतीय मूल का होने पर गर्व करते हैं। उन्होंने हिंदी को उत्साह से अपनाया है। इस कथन का उद्देश्य उनके पुराने श्रमिक जीवन से आगे बढ़कर उनके वर्तमान सांस्कृतिक योगदान की ओर ध्यान खींचना है।

चरण 2: सांस्कृतिक दूत का अर्थ स्पष्ट करें उन देशों में हिंदी केवल बाज़ार की भाषा नहीं, साहित्य और पत्रकारिता की भाषा भी है। हिंदी और भारतीयता को बनाए रखकर ये लोग विदेशों में भारत की सांस्कृतिक पहचान पहुँचाते हैं। लेखक उनके कार्य की तुलना ऋषियों

और बौद्धभिक्षुओं द्वारा भारतीयता के प्रसार से करता है। इसलिए वे व्यवहार में भारतीय संस्कृति के प्रतिनिधि हैं।

चरण 3: निष्कर्ष आशय है कि कभी बँधुआ मज़दूर बनाकर विदेश ले जाए गए भारतीयों के समुदाय आज हिंदी, साहित्य, पत्रकारिता और भारतीय संस्कृति को सँजोकर तथा फैलाकर भारत के सांस्कृतिक प्रतिनिधि की भूमिका निभा रहे हैं।

त्वरित सुझाव: सांस्कृतिक दूत का अर्थ स्पष्ट करते हुए हिंदी, साहित्य और पत्रकारिता में उनके योगदान का प्रमाण दें।

1(ज). हिंदी के अधिक प्रचार-प्रसार के लिए भारत को क्या करना चाहिए – दो सुझाव दीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अनुच्छेद के अंतिम वाक्य में भारत का दायित्व स्पष्ट किया गया है। सुझाव उसी कथ्य पर आधारित होने चाहिए।
- भाषा के प्रसार के लिए संस्थागत मान्यता तथा भाषा-भाषियों को व्यावहारिक सहायता, दोनों आवश्यक हैं।

चरण 1: अंतरराष्ट्रीय मान्यता का प्रयास भारत को हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की भाषा बनाने के लिए निरंतर प्रयास करना चाहिए। इससे हिंदी को अंतरराष्ट्रीय मंच पर प्रतिष्ठा और व्यापक उपयोग के अवसर मिलेंगे। अनुच्छेद में इस उद्देश्य के लिए भारत की प्रतिबद्धता का उल्लेख है।

चरण 2: विदेशों के हिंदी भाषियों को समर्थन भारत को विश्वभर में बिखरे हिंदी भाषियों को बौद्धिक और संसाधन-संबंधी समर्थन देना चाहिए। विदेशों में हिंदी अपनाए हुए भारतवंशियों के साहित्य और पत्रकारिता को सहयोग देना इसी दायित्व का हिस्सा है। इससे उनका भारत से सांस्कृतिक संबंध भी सुदृढ़ होगा और हिंदी का व्यवहार बढ़ेगा।

चरण 3: निष्कर्ष भारत को हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की भाषा बनाने का प्रयास करना चाहिए तथा विश्वभर के हिंदी भाषियों को बौद्धिक और संसाधन-संबंधी सहायता देनी चाहिए।

त्वरित सुझाव: दो सुझावों को अलग-अलग लिखें और दोनों को अनुच्छेद के अंतिम वाक्य से जोड़ें।

2. तूफ़ानों की ओर घुमा दो नाविक निज पतवार।
आज सिंधु ने विष उगला है
लहरों का यौवन मचला है
आज हृदय में और सिंधु में
साथ उठा है ज्वार।
यह असीम निज सीमा जाने
सागर भी तो यह पहचाने
मिट्टी के पुतले मानव ने
कभी न मानी हार।
लहरों के स्वर में कुछ बोलो
इस अंधड़ में साहस तोलो
कभी-कभी मिलता जीवन में
तूफ़ानों का प्यार।
सागर की अपनी क्षमता है
पर नाविक भी कब थकता है
जब तक साँसों में स्पंदन है
उसका हाथ नहीं रुकता है
इसके ही बल पर कर डाले सातों सागर पार
तूफ़ानों की ओर घुमा दो नाविक निज पतवार। [5 अंक]

2(क). कवि नाविक से क्या अनुरोध कर रहा है और क्यों? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में नाविक से किया गया अनुरोध पहली और अंतिम पंक्ति में प्रत्यक्ष है।
- तूफ़ान का सामना करने का कारण मनुष्य का साहस और उसकी अजेय संकल्पशक्ति है।

चरण 1: अनुरोध पहचानना कवि नाविक से अपनी पतवार तूफ़ानों की ओर घुमा देने का अनुरोध कर रहा है। वह चाहता है कि नाविक संकट से घबराकर पीछे न हटे, बल्कि साहसपूर्वक उसका सामना करे।

चरण 2: अनुरोध का कारण कवि के अनुसार कठिन परिस्थितियों में ही मनुष्य के साहस की परीक्षा होती है। नाविक अपनी संघर्षशक्ति से समुद्र को बता सकता है कि मनुष्य हार नहीं मानता। इसीलिए कवि उसे चुनौती की ओर बढ़ने की प्रेरणा देता है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि नाविक से तूफ़ानों की ओर पतवार मोड़ने को कहता है, ताकि वह चुनौतियों का सामना करके अपना साहस और अटूट संकल्प सिद्ध करे।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले कवि का अनुरोध लिखें, फिर उससे जुड़ा साहस की परीक्षा का कारण बताएँ।

2(ख). कवि के अनुसार समुद्र को क्या पहचान लेना चाहिए? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समुद्र की व्यापक शक्ति के सामने कविता मनुष्य के दृढ़ निश्चय को प्रतिष्ठित करती है।
- उत्तर का आधार मिट्टी के पुतले मानव ने कभी न मानी हार पंक्ति है।

चरण 1: समुद्र की शक्ति का संकेत समुद्र विशाल और शक्तिशाली है, किंतु कवि चाहता है कि वह अपनी शक्ति की सीमा को भी जाने। केवल उसके विस्तार और प्रचंड लहरों से मनुष्य का संकल्प समाप्त नहीं होता।

चरण 2: मनुष्य की विशेषता स्पष्ट करना समुद्र को पहचान लेना चाहिए कि मिट्टी का बना मनुष्य भी कभी हार नहीं मानता। नाविक जीवित रहने तक निरंतर पतवार चलाता है और इसी साहस से सातों सागर पार करता है।

चरण 3: निष्कर्ष समुद्र को पहचान लेना चाहिए कि मनुष्य दृढ़संकल्पी है और उसकी प्रचंड शक्ति के सामने भी हार नहीं मानता।

त्वरित सुझाव: समुद्र के विस्तार का वर्णन बढ़ाने के बजाय मानव के हार न मानने के गुण पर उत्तर केंद्रित रखें।

2(ग). नाविक के स्वभाव और संघर्ष को स्पष्ट कीजिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चरित्र संबंधी उत्तर में नाविक के गुण उसके कार्यों से सिद्ध किए जाते हैं।
- लगातार पतवार चलाना उसके साहस, धैर्य और कर्मठता का प्रमाण है।

चरण 1: स्वभाव का उल्लेख नाविक साहसी, दृढ़निश्चयी और अथक परिश्रमी है। वह समुद्र की शक्ति तथा तूफ़ानों से घबराता नहीं है। प्रतिकूल परिस्थितियाँ उसके हौसले को तोड़ने के बजाय उसके साहस की परीक्षा लेती हैं।

चरण 2: संघर्ष का प्रमाण जब तक उसकी साँसों में स्पंदन है, उसका हाथ नहीं रुकता। वह लहरों और तूफ़ानों से जूझते हुए निरंतर पतवार चलाता रहता है। इसी अटूट प्रयास और हार न मानने की प्रवृत्ति के बल पर वह सातों सागर पार कर लेता है।

चरण 3: निष्कर्ष नाविक निर्भीक, कर्मठ और दृढ़संकल्पी है। वह जीवन के अंतिम क्षण तक तूफ़ानों से संघर्ष करता और निरंतर आगे बढ़ता रहता है।

त्वरित सुझाव: नाविक के प्रत्येक गुण को उसके न रुकने वाले हाथ या समुद्र पार करने के प्रयास से जोड़ें।

2(घ). आशय स्पष्ट कीजिए – 'कभी-कभी मिलता जीवन में तूफ़ानों का प्यार' [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- तूफ़ान यहाँ जीवन की विपत्तियों और चुनौतियों का संकेत है।
- तूफ़ानों के प्यार का आशय कठिनाइयों से मिलने वाले साहस-परीक्षण के अवसर से है।

चरण 1: प्रतीक का अर्थ समझना तूफ़ान जीवन में आने वाली कठिनाइयों का प्रतीक है। कवि इन कठिनाइयों को केवल भय और दुख का कारण नहीं मानता; वह इन्हें मनुष्य की छिपी शक्ति को सामने लाने वाला अवसर समझता है।

चरण 2: पंक्ति का आशय स्पष्ट करना जीवन में कभी-कभी ऐसे संकट आते हैं जिनका सामना करके व्यक्ति अपना साहस परख सकता है और अपनी क्षमता पहचान सकता है। इसलिए चुनौतियों से बचने के बजाय उनका स्वागत करना चाहिए। उनका सामना करना मनुष्य के आत्मविश्वास को मजबूत करता है।

चरण 3: निष्कर्ष इस पंक्ति का आशय है कि विपत्तियाँ मनुष्य को अपना साहस और क्षमता परखने का दुर्लभ अवसर देती हैं; इसलिए उनका निर्भीक होकर सामना करना चाहिए।

त्वरित सुझाव: पंक्ति का शाब्दिक अर्थ न लिखें; तूफ़ान को कठिनाई और प्यार को साहस की परीक्षा के अवसर से जोड़ें।

2(ङ). काव्यांश का केंद्रीय भाव क्या है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- केंद्रीय भाव पूरी कविता के मुख्य संदेश को संक्षेप में व्यक्त करता है।
- नाविक की निरंतर कर्मशीलता और मानव की अजेय संकल्पशक्ति कविता के केंद्र में हैं।

चरण 1: कविता के प्रमुख संकेत जोड़ना कवि नाविक को तूफ़ानों की ओर बढ़ने के लिए कहता है और मनुष्य के कभी हार न मानने की बात करता है। नाविक का निरंतर पतवार चलाना इस विचार को व्यवहार में प्रकट करता है।

चरण 2: सामूहिक संदेश बताना कविता का संदेश है कि जीवन की कठिनाइयों से भयभीत होकर पीछे नहीं हटना चाहिए। साहस, दृढ़संकल्प और निरंतर परिश्रम से बड़ी बाधाओं को भी पार किया जा सकता है। विपत्तियाँ हमारी संघर्षशक्ति की परीक्षा लेने का अवसर देती हैं।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश का केंद्रीय भाव है कि मनुष्य को साहस, अटूट संकल्प और निरंतर कर्म के बल पर जीवन की चुनौतियों का सामना करते हुए आगे बढ़ना चाहिए।

त्वरित सुझाव: केंद्रीय भाव में घटना का सार भर न दें; उससे मिलने वाले साहस और कर्मशीलता के संदेश को लिखें।

3. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर निबन्ध लिखिए:

(क) मेरे सपनों का भारत (ख) जनसंख्या वृद्धि की समस्या (ग) खोजी पत्रकारिता (घ) नारी जीवन का संघर्ष [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबंध में विषयानुकूल शीर्षक, भूमिका, विचारों का क्रमबद्ध विस्तार और सार्थक उपसंहार होता है।
- यहाँ अभ्यास के लिए चारों विकल्पों के स्वतंत्र आदर्श निबंध दिए गए हैं; परीक्षा में किसी एक विषय का चयन करना है।

चरण 1: प्रारूप और विषयवस्तु की योजना पहले विषय की केंद्रीय समस्या या कल्पना स्पष्ट करें। उसके बाद स्थिति, कारण, प्रभाव तथा सुधार के उपाय क्रम से रखें। व्यक्तिगत अनुभव का उपयोग विषय से जोड़कर करें और अंत में सकारात्मक निष्कर्ष दें। प्रत्येक विकल्प का निम्न उत्तर अपने आप में पूर्ण निबंध है।

चरण 2: विकल्प (क): मेरे सपनों का भारत **मेरे सपनों का भारत**

मेरे सपनों का भारत ऐसा देश है जहाँ हर व्यक्ति सम्मान से जी सके। उसकी पहचान केवल ऊँची इमारतों और आधुनिक उपकरणों से नहीं, बल्कि नागरिकों की संवेदनशीलता, समान अवसर और सामाजिक न्याय से बने। स्वतंत्रता का वास्तविक अर्थ तभी पूरा होगा जब विकास का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुँचे।

मैं ऐसे भारत की कल्पना करता हूँ जहाँ कोई बच्चा गरीबी के कारण विद्यालय न छोड़ दे। शिक्षा गुणवत्तापूर्ण हो और विद्यार्थियों को सोचने, प्रश्न करने तथा श्रम का सम्मान करने की सीख दे। अस्पताल सबके लिए सुलभ हों तथा गाँवों को स्वच्छ जल, बिजली और उपयोगी परिवहन मिले। किसान को उसकी उपज का उचित मूल्य और युवाओं को सम्मानजनक रोजगार प्राप्त हो।

इस भारत में स्त्री और पुरुष को समान अधिकार मिलें। जाति, धर्म, भाषा और क्षेत्र के आधार पर भेदभाव न हो। विविधता विवाद का कारण नहीं, परस्पर सीखने का अवसर बने। प्रशासन पारदर्शी हो और सार्वजनिक धन का उपयोग ईमानदारी से किया जाए।

प्रकृति की रक्षा भी मेरे सपनों के भारत का आवश्यक अंग है। नदियाँ स्वच्छ रहें, वन सुरक्षित हों और विकास में भावी पीढ़ियों का ध्यान रखा जाए। ऐसा देश केवल सरकार के प्रयासों से नहीं बनेगा। नागरिकों को अपने कर्तव्य निभाने होंगे। मैं शिक्षा, ईमानदारी और सेवा के माध्यम से इस सपने को साकार करने में अपना योगदान देना चाहता हूँ।

चरण 3: विकल्प (ख): जनसंख्या वृद्धि की समस्या **जनसंख्या वृद्धि की समस्या**

मनुष्य देश की सबसे बड़ी शक्ति है, किंतु जब जनसंख्या की वृद्धि उपलब्ध संसाधनों और सुविधाओं के विस्तार से तेज हो, तब अनेक समस्याएँ जन्म लेती हैं। सीमित भूमि, जल, रोजगार और सार्वजनिक सेवाओं पर बढ़ता दबाव जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित करता है। इसलिए जनसंख्या के प्रश्न को केवल संख्या नहीं, मानव विकास के संदर्भ में समझना चाहिए।

अशिक्षा, कम आयु में विवाह, पुत्र की चाह और परिवार नियोजन संबंधी जानकारी का अभाव अनियोजित जनसंख्या वृद्धि को बढ़ाते हैं। महिलाओं को शिक्षा और निर्णय का पर्याप्त अधिकार न मिलना भी इसका कारण है। सामाजिक सुरक्षा की कमी के कारण कुछ परिवार अधिक बच्चों को भविष्य का सहारा मानते हैं।

तीव्र वृद्धि से विद्यालयों, अस्पतालों और आवासों की आवश्यकता बढ़ती है। रोजगार के पर्याप्त अवसर न होने पर बेरोजगारी और गरीबी का चक्र मजबूत होता है। शहरों में भीड़, यातायात, प्रदूषण तथा झुग्गियों का विस्तार होता है। प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन पर्यावरण का संतुलन बिगाड़ता है।

समाधान के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, विशेषकर बालिका शिक्षा, अत्यंत आवश्यक है। विवाह की उचित आयु, मातृ स्वास्थ्य, स्वैच्छिक परिवार नियोजन और छोटे परिवार के प्रति जागरूकता बढ़ानी चाहिए। योजनाएँ दमन या भेदभाव पर नहीं, स्वास्थ्य, समानता और सूचित निर्णय पर आधारित हों। कौशल और रोजगार उपलब्ध कराकर बड़ी युवा आबादी को देश की शक्ति बनाया जा सकता है। संतुलित जनसंख्या और सक्षम नागरिक मिलकर ही स्थायी विकास का आधार बनते हैं।

चरण 4: विकल्प (ग): खोजी पत्रकारिता **खोजी पत्रकारिता**

लोकतंत्र में पत्रकारिता का दायित्व जनता को सही जानकारी देना और सत्ता से प्रश्न करना है। खोजी पत्रकारिता इस दायित्व को आगे बढ़ाती है। इसमें पत्रकार गहराई से जाँच करके उन तथ्यों को उजागर करता है जिन्हें सार्वजनिक हित के विरुद्ध छिपाया जा रहा हो। यह केवल सनसनी फैलाने की कला नहीं, प्रमाणों पर आधारित सत्य की खोज है।

भ्रष्टाचार, सरकारी योजनाओं की अनियमितता, पर्यावरण को नुकसान या शोषण जैसे विषयों पर खोजी रिपोर्ट समाज को सचेत करती है। पत्रकार दस्तावेज जुटाता है, विभिन्न स्रोतों से बातचीत करता है और प्राप्त सूचनाओं का मिलान करता है। संबंधित पक्ष का उत्तर लेना

तथा आरोप और सिद्ध तथ्य के बीच अंतर स्पष्ट करना उसकी जिम्मेदारी है।

इस कार्य में समय, धैर्य और साहस चाहिए। कभी प्रभावशाली लोगों का दबाव पड़ता है, तो कभी सूचना तक पहुँचना कठिन होता है। स्रोत की पहचान की रक्षा करते हुए भी रिपोर्ट की विश्वसनीयता सुनिश्चित करनी होती है। अधूरी जानकारी, मनगढ़ंत आरोप या निजता में अनावश्यक हस्तक्षेप खोजी पत्रकारिता की गरिमा को नष्ट करते हैं।

सच्ची खोजी पत्रकारिता जनता के अधिकारों की रक्षा करती है और संस्थाओं को जवाबदेह बनाती है। परंतु उसके लिए संपादकीय स्वतंत्रता, तथ्य-जाँच और नैतिक अनुशासन आवश्यक हैं। समाज को भी प्रमाणपूर्ण रिपोर्ट और अफवाह में भेद करना सीखना चाहिए। जब पत्रकार निर्भीकता के साथ निष्पक्षता बनाए रखता है, तब उसकी खोज लोकतंत्र को अधिक पारदर्शी और मजबूत बनाती है।

चरण 5: विकल्प (घ): नारी जीवन का संघर्ष **नारी जीवन का संघर्ष**

समाज के निर्माण में नारी का योगदान अनिवार्य है, फिर भी उसे समान सम्मान और अवसर पाने के लिए लंबा संघर्ष करना पड़ा है। यह संघर्ष घर और बाहर दोनों स्थानों पर दिखाई देता है। शिक्षा, आर्थिक स्वतंत्रता और अपने जीवन के निर्णयों में भागीदारी उसके स्वाभिमान से जुड़े प्रश्न हैं।

कई परिवारों में बालिका से घरेलू काम की अपेक्षा अधिक और उसकी शिक्षा पर ध्यान कम दिया जाता है। रूढ़ियाँ उसके विषय, पेशे और विवाह संबंधी निर्णयों को सीमित करती हैं। कार्यस्थल पर अवसरों की असमानता, असुरक्षा और घर की जिम्मेदारियों का असंतुलित बोझ उसकी कठिनाइयाँ बढ़ाते हैं। दहेज तथा हिंसा जैसी कुप्रथाएँ भी उसके अधिकारों पर चोट करती हैं।

इसके बावजूद महिलाएँ शिक्षा, विज्ञान, खेल, प्रशासन और कला में अपनी क्षमता सिद्ध कर रही हैं। उनके प्रयास बताते हैं कि अवसर मिलने पर प्रतिभा किसी सीमा में नहीं बँधती। आर्थिक आत्मनिर्भरता और शिक्षा उन्हें अन्याय पहचानने तथा उसका विरोध करने की शक्ति देती हैं।

नारी के संघर्ष का समाधान केवल उसकी व्यक्तिगत दृढ़ता पर नहीं छोड़ा जा सकता। परिवार को पुत्र और पुत्री के पालन-पोषण में समानता रखनी होगी। पुरुषों को घरेलू जिम्मेदारियाँ साझा करनी चाहिए। संस्थाओं को सुरक्षित वातावरण और निष्पक्ष अवसर सुनिश्चित करने होंगे। कानून के साथ सामाजिक सोच में परिवर्तन भी जरूरी है। नारी को दया का पात्र मानने के स्थान पर स्वतंत्र और समान नागरिक माना जाए। तभी उसका संघर्ष सम्मानपूर्ण जीवन की उपलब्धि में बदल सकेगा और समाज वास्तव में प्रगतिशील बन सकेगा।

चरण 6: निष्कर्ष चारों विषयों में केंद्रीय विचार, क्रमबद्ध विस्तार और उपसंहार प्रस्तुत हैं। परीक्षा में चुने गए किसी एक विषय का पूर्ण निबंध लिखें।

त्वरित सुझाव: निबंध शुरू करने से पहले भूमिका, तीन मुख्य बिंदु और निष्कर्ष की छोटी रूपरेखा बना लें।

---

4. 'प्राथमिक कक्षाओं में शिक्षा का माध्यम मातृभाषा ही होना चाहिए।' इसके पक्ष या विपक्ष में तर्क देते हुए किसी समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।

अथवा — ग्रामीण अंचलों में किसानों की शोचनीय दशा के कारणों का विश्लेषण करते हुए अपने राज्य के कृषि मंत्री को पत्र लिखिए।

[5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- औपचारिक पत्र में प्रेषक का पता, तिथि, प्राप्तकर्ता, विषय, संबोधन, विषयानुकूल अनुच्छेद और समापन का क्रम रखा जाता है।
- संपादक को पत्र में सार्वजनिक समस्या पर तर्क तथा मंत्री को पत्र में कारणों के साथ व्यावहारिक सुझाव दिए जाते हैं।

चरण 1: दोनों विकल्पों की योजना पहले पत्र में मातृभाषा के पक्ष में समझ, अभिव्यक्ति और सीखने के आत्मविश्वास के तर्क रखें। अन्य भाषाओं के अध्ययन का विरोध न करें। दूसरे पत्र में किसान की आर्थिक कठिनाइयों के कारण बताते हुए सिंचाई, बाजार, ऋण और सुरक्षा संबंधी उपाय सुझाएँ। नीचे दोनों विकल्पों के पूर्ण नमूने हैं।

चरण 2: विकल्प 1: संपादक को पत्र 24, विकास नगर

नई दिल्ली

15 मार्च, 2016

सेवा में,

संपादक महोदय

दैनिक जनवाणी

नई दिल्ली

विषय: प्राथमिक शिक्षा में मातृभाषा को माध्यम बनाने के पक्ष में।

महोदय,

आपके लोकप्रिय समाचार-पत्र के माध्यम से मैं प्राथमिक कक्षाओं में मातृभाषा को शिक्षा का माध्यम बनाने की आवश्यकता की ओर ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ।

बालक घर और परिवेश में जिस भाषा को सुनता और बोलता है, उसी में वह अपने अनुभव सहजता से व्यक्त कर पाता है। प्राथमिक स्तर पर परिचित भाषा में पढ़ाए जाने से उसका ध्यान अपरिचित शब्दों को रटने के स्थान पर विषय समझने में लगता है। वह निर्भय होकर प्रश्न पूछता है और कक्षा की गतिविधियों में सक्रिय रहता है। इससे शिक्षा अधिक आनंददायक तथा समावेशी बनती है।

अपरिचित माध्यम के कारण अनेक बच्चे अपनी बात कहने में संकोच करते हैं। उनकी प्रतिभा का मूल्यांकन भाषा की कठिनाई से प्रभावित नहीं होना चाहिए। मातृभाषा में मजबूत आधार बनने के बाद अन्य भाषाएँ सीखना भी सरल हो सकता है। इसका अर्थ अंग्रेजी अथवा किसी अन्य भाषा की उपेक्षा करना नहीं है; उन्हें अलग विषय के रूप में प्रभावी ढंग से पढ़ाया जा सकता है।

इस व्यवस्था की सफलता के लिए उपयुक्त पुस्तकें, प्रशिक्षित शिक्षक और बहुभाषी क्षेत्रों में बच्चों की भाषाई आवश्यकताओं का ध्यान जरूरी है। आशा है कि आप इस विषय को स्थान देकर शिक्षा संबंधी सार्थक चर्चा को प्रोत्साहित करेंगे।

धन्यवाद।

भवदीय

अमित कुमार

चरण 3: विकल्प 2: कृषि मंत्री को पत्र ग्राम रामपुर, डाकघर रामपुर

जिला सीतापुर, उत्तर प्रदेश

15 मार्च, 2016

सेवा में,

माननीय कृषि मंत्री

उत्तर प्रदेश सरकार

लखनऊ

विषय: ग्रामीण किसानों की शोचनीय दशा सुधारने हेतु निवेदन।

महोदय,

मैं आपके राज्य का निवासी हूँ और इस पत्र द्वारा ग्रामीण अंचलों में किसानों की कठिन परिस्थितियों की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। अन्न उत्पादन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के बावजूद अनेक किसान आर्थिक असुरक्षा में जीवन बिता रहे हैं।

छोटी और बिखरी जोतों के कारण आधुनिक साधनों का उपयोग महँगा पड़ता है। सिंचाई की अपर्याप्त व्यवस्था से खेती वर्षा पर निर्भर रहती है। असमय वर्षा या सूखे से फसल नष्ट होने पर किसान की पूरी आय प्रभावित होती है। बीज, खाद, बिजली और परिवहन की लागत बढ़ती है, जबकि उपज बेचते समय उसे उचित मूल्य नहीं मिलता। भंडारण की कमी और तत्काल ऋण चुकाने की विवशता के कारण वह कम दाम पर फसल बेच देता है। संस्थागत ऋण आसानी से न मिलने पर महँगे निजी कर्ज का बोझ भी बढ़ जाता है।

कृपया सिंचाई सुविधाओं का विस्तार, समय पर सुलभ ऋण, गुणवत्तापूर्ण बीज तथा कृषि परामर्श सुनिश्चित कराएँ। खरीद केंद्र सक्रिय किए जाएँ और भुगतान समय पर हो। स्थानीय भंडारण, बाजार की जानकारी तथा फसल क्षति पर शीघ्र सहायता की व्यवस्था भी आवश्यक है।

आशा है कि आप संबंधित विभागों को प्रभावी कार्रवाई का निर्देश देंगे, जिससे किसान सम्मान और सुरक्षा के साथ खेती कर सकें।

धन्यवाद।

भवदीय

अमित कुमार
ग्राम रामपुर का निवासी

चरण 4: निष्कर्ष दोनों पत्रों में निर्धारित औपचारिक क्रम तथा विषयानुकूल तर्क और सुझाव दिए गए हैं। परीक्षा में चुने गए विकल्प का एक पत्र लिखें।

त्वरित सुझाव: पत्र में विषय की एक स्पष्ट पंक्ति लिखें और मुख्य अनुच्छेदों में समस्या, कारण तथा अपेक्षित कार्रवाई रखें।

5(क). 'समाचार' क्या है? कोई एक परिभाषा स्पष्ट कीजिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाचार का आधार नवीनता, तथ्यात्मकता और सार्वजनिक रुचि या महत्व है।
- समाचार में सत्यापित तथ्य प्रधान होते हैं; संवाददाता की निजी कल्पना या निराधार अफवाह नहीं।

चरण 1: परिभाषा प्रस्तुत करना किसी हाल की ऐसी घटना, विचार या समस्या का सत्य तथा तथ्यपरक विवरण, जिसमें लोगों की रुचि हो या जिसका उनके जीवन पर प्रभाव पड़ता हो, समाचार कहलाता है।

चरण 2: परिभाषा का आशय स्पष्ट करना इस परिभाषा में हाल की घटना से नवीनता और सत्य तथा तथ्यपरक विवरण से विश्वसनीयता का बोध होता है। सार्वजनिक रुचि बताती है कि सूचना पाठकों के लिए उपयोगी या महत्वपूर्ण होनी चाहिए। उदाहरण के लिए किसी नगर में नई सार्वजनिक बस सेवा आरंभ होने का सत्यापित विवरण समाचार है, क्योंकि उससे यात्रियों को सुविधा संबंधी जानकारी मिलती है। केवल सुनी-सुनाई और अपुष्ट बात को समाचार नहीं मानना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष समाचार नवीन, सत्यापित और जनरुचि अथवा जनमहत्व से संबंधित घटना या विषय का तथ्यपरक विवरण है।

त्वरित सुझाव: परिभाषा लिखते समय नवीनता, सत्यता और जनरुचि के तीन प्रमुख तत्त्व अवश्य शामिल करें।

5(ख). प्रिंट माध्यम की दो उपयोगिताएँ लिखिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मुद्रित माध्यम में समाचारपत्र, पत्रिकाएँ तथा पुस्तकें आती हैं; इनमें लिखित सामग्री पाठक के पास उपलब्ध रहती है।
- इस माध्यम की उपयोगिता पढ़ने की स्वतंत्रता और सामग्री के स्थायी संदर्भ के रूप में स्पष्ट की जा सकती है।

चरण 1: अपनी सुविधा से अध्ययन पाठक मुद्रित सामग्री को अपनी सुविधानुसार, अपनी गति से और आवश्यकतानुसार बार-बार पढ़ सकता है। किसी कठिन अंश को समझने के लिए वह रुककर दोबारा उसका अध्ययन भी कर सकता है।

चरण 2: संग्रह और संदर्भ समाचारपत्र, पत्रिका अथवा पुस्तक को सुरक्षित रखा जा सकता है। बाद में किसी सूचना, घटना या विचार की पुष्टि और संदर्भ के लिए उसी सामग्री का पुनः उपयोग किया जा सकता है।

चरण 3: निष्कर्ष प्रिंट माध्यम की दो उपयोगिताएँ हैं—अपनी सुविधा और गति से बार-बार पढ़ने की सुविधा तथा सामग्री को सुरक्षित रखकर भविष्य में संदर्भ के रूप में उपयोग करने की सुविधा।

त्वरित सुझाव: दो अलग उपयोगिताएँ लिखें: एक पढ़ने की सुविधा से और दूसरी संग्रह व भविष्य के संदर्भ से संबंधित रखें।

5(ग). संपादन के किन्हीं दो सिद्धांतों का उल्लेख कीजिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादन का उद्देश्य प्रकाशन योग्य सामग्री को विश्वसनीय, स्पष्ट और पाठक के लिए उपयोगी बनाना है।
- संपादन में तथ्यपरकता और निष्पक्षता दो प्रमुख सिद्धांत हैं।

चरण 1: तथ्यपरकता का पालन प्रकाशन से पहले समाचार में दिए गए नामों, स्थानों, तिथियों, आँकड़ों और घटनाओं की सत्यता जाँची जानी चाहिए। अपुष्ट सूचना या अफवाह को सत्य के रूप में प्रस्तुत नहीं करना चाहिए।

चरण 2: निष्पक्ष प्रस्तुति समाचार में संपादक का निजी पूर्वाग्रह या किसी पक्ष का अनुचित समर्थन नहीं झलकना चाहिए। संबंधित पक्षों की बात उचित रूप से रखते हुए तथ्यों और निजी राय के बीच स्पष्ट अंतर बनाए रखना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष संपादन के दो सिद्धांत हैं—तथ्यपरकता अर्थात तथ्यों की शुद्धता और निष्पक्षता अर्थात पूर्वाग्रह से मुक्त प्रस्तुति।

त्वरित सुझाव: केवल दो स्पष्ट सिद्धांत चुनें और हर सिद्धांत का अर्थ एक छोटे वाक्य में लिखें; समाचार और निजी राय को न मिलाएँ।

5(घ). 'पीत पत्रकारिता' किसे कहा जाता है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पत्रकारिता का दायित्व सत्यापित सूचनाओं को जनहित में प्रस्तुत करना है।
- पीत पत्रकारिता में सत्य और जनहित की अपेक्षा सनसनी तथा व्यावसायिक लाभ को प्राथमिकता दी जाती है।

चरण 1: प्रवृत्ति की पहचान जब पाठकों को आकर्षित करने और प्रसार या बिक्री बढ़ाने के लिए खबरों को उत्तेजक, अतिरंजित और सनसनीखेज बनाया जाता है, तब पत्रकारिता अपनी तथ्यनिष्ठ भूमिका से हट जाती है।

चरण 2: परिभाषा को स्पष्ट करना ऐसी पत्रकारिता में अफवाहों, अपुष्ट बातों, झूठे आरोपों या अनावश्यक निजी प्रसंगों को बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत किया जा सकता है। इसलिए इसकी पहचान केवल रोचक शैली नहीं, बल्कि सत्य की उपेक्षा करके सनसनी फैलाना है।

चरण 3: निष्कर्ष सत्य और जनहित की उपेक्षा करके बिक्री अथवा लोकप्रियता बढ़ाने के लिए अफवाहों, अपुष्ट सूचनाओं तथा घटनाओं को सनसनीखेज और बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत करना पीत पत्रकारिता कहलाता है।

त्वरित सुझाव: परिभाषा में सनसनीखेज प्रस्तुति और सत्य की उपेक्षा, दोनों बातें जोड़ें; हर रोचक समाचार को पीत पत्रकारिता न कहें।

5(ङ). रेडियो समाचारों की भाषा की दो विशेषताएँ समझाइए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रेडियो श्रव्य माध्यम है; श्रोता समाचार को सुनता है और प्रसारण के समय मुद्रित पाठ की तरह पीछे लौटकर नहीं पढ़ सकता।
- इसलिए रेडियो समाचारों की भाषा सुनते ही समझ में आने वाली तथा बोलचाल के निकट होनी चाहिए।

चरण 1: सरल और सहज भाषा रेडियो समाचारों में प्रचलित, आसानी से समझ में आने वाले शब्दों का प्रयोग होता है। कठिन, दुर्लभ और अत्यधिक साहित्यिक शब्दों से बचा जाता है, ताकि विविध स्तरों के श्रोता समाचार का अर्थ तुरंत ग्रहण कर सकें।

चरण 2: छोटे और स्पष्ट वाक्य वाक्य छोटे, सीधे और अर्थ की दृष्टि से स्पष्ट होने चाहिए। एक वाक्य में बहुत-सी सूचनाएँ भरने से श्रोता उलझ सकता है; इसलिए प्रत्येक वाक्य में मुख्य बात सहज ढंग से रखी जाती है।

चरण 3: निष्कर्ष रेडियो समाचारों की भाषा की दो विशेषताएँ हैं—सरल, प्रचलित शब्दों का प्रयोग और छोटे, सीधे, स्पष्ट वाक्यों में प्रस्तुति। इससे समाचार सुनते ही समझ में आता है।

त्वरित सुझाव: रेडियो की भाषा बताते समय श्रोता का ध्यान रखें: शब्द सरल हों और वाक्य इतने छोटे हों कि सुनते ही अर्थ खुल जाए।

---

6. 'नगरों की ओर पलायन' अथवा 'महँगाई का दानव' विषय पर एक फ़ीचर का आलेख लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर किसी विषय के मानवीय पहलुओं को रोचक वर्णन, दृश्य, संवेदना और विचार के साथ प्रस्तुत करता है।
- आकर्षक शीर्षक, जीवंत आरंभ, विषय का क्रमबद्ध विस्तार तथा विचारोत्तेजक अंत फ़ीचर को प्रभावी बनाते हैं।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति प्रश्न में दिए गए दोनों वैकल्पिक विषयों के स्वतंत्र नमूने नीचे प्रस्तुत हैं। पहले विषय में गाँव से शहर आने वाले व्यक्ति के अनुभव, पलायन के कारण, प्रभाव और समाधान का क्रम रखा गया है। दूसरे में घरेलू बजट से आरंभ करके महँगाई के प्रभाव और राहत के उपायों तक बात बढ़ती है। दोनों आलेखों में मानवीय दृश्य प्रमुख है; अपुष्ट आँकड़ों का प्रयोग नहीं किया गया है।

चरण 2: नगरों की ओर पलायन : पूरा फ़ीचर रोटी की तलाश में छूटता आँगन

लेखक: एक विद्यार्थी

बस की खिड़की से पीछे छूटते खेतों को देखता युवक अपना छोटा-सा झोला कसकर पकड़ लेता है। शहर में कोई निश्चित नौकरी उसका इंतजार नहीं कर रही, फिर भी उसे भरोसा है कि वहाँ काम मिल जाएगा। गाँव के आँगन से नगर की भीड़ तक पहुँचने की यह यात्रा केवल दूरी तय करना नहीं, जीवन को नए सिरे से शुरू करना है।

गाँव में रोजगार के सीमित अवसर, खेती की अनिश्चित आय और शिक्षा तथा स्वास्थ्य की सुविधाओं का अभाव अनेक लोगों को बाहर जाने के लिए प्रेरित करता है। शहर उन्हें मजदूरी, नौकरी और बेहतर भविष्य की संभावना दिखाता है।

लेकिन शहर की चमक के पीछे संघर्ष भी है। महँगा किराया, लंबी यात्राएँ, असुरक्षित काम और भीड़भरी बस्तियाँ नए आने वालों की परीक्षा लेती हैं। पीछे गाँव में बुजुर्ग अकेले पड़ जाते हैं और बच्चों का साथ छूटता है। फिर भी इन लोगों का श्रम नगरों की इमारतों, सेवाओं और रोजमर्रा के जीवन को चलाता है।

इस यात्रा को विवशता बनने से रोकने के लिए गाँवों में रोजगार, अच्छी शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाएँ और स्थानीय उद्योग आवश्यक हैं। नगरों में श्रमिकों को सम्मानजनक आवास और सुरक्षित काम मिलना चाहिए। विकास तब सार्थक होगा, जब गाँव छोड़ना मजबूरी नहीं, व्यक्ति का स्वतंत्र निर्णय बनेगा।

चरण 3: महँगाई का दानव : पूरा फ़ीचर थैले का वजन घटा, खर्च बढ़ा

लेखक: एक विद्यार्थी

बाजार से लौटी माँ थैला मेज पर रखती है। सामान पहले से कम है, मगर खर्च पहले से अधिक। वह रसोई का हिसाब लगाती है और किसी जरूरी खरीद को अगले सप्ताह तक टाल देती है। महँगाई का दानव इसी तरह चुपचाप घर के बजट में प्रवेश करता है।

दाल, सब्जी, दूध, किराया और यातायात का खर्च बढ़ने पर सीमित आय वाले परिवारों की परेशानी बढ़ जाती है। जब आमदनी उसी अनुपात में नहीं बढ़ती, तो बचत घटती है। कभी पौष्टिक भोजन में कटौती होती है, कभी बच्चों की जरूरत टलती है। बुजुर्गों की दवाइयों का खर्च भी चिंता का कारण बन जाता है।

वस्तुओं की आपूर्ति में बाधा, परिवहन और उत्पादन की बढ़ती लागत तथा जमाखोरी जैसी स्थितियाँ कीमतों पर दबाव डाल सकती हैं। परेशानी केवल जेब तक सीमित नहीं रहती; भविष्य की असुरक्षा और घरेलू तनाव भी बढ़ता है।

राहत के लिए जरूरी वस्तुओं की नियमित आपूर्ति, जमाखोरी पर नियंत्रण और जरूरतमंद परिवारों तक सहायता पहुँचना आवश्यक है। उपभोक्ता भी सोच-समझकर खरीदारी करें, अनावश्यक संग्रह से बचें और वस्तुओं की बर्बादी रोकें। लेकिन केवल घरेलू कटौती पर्याप्त नहीं; प्रभावी सार्वजनिक व्यवस्था भी चाहिए।

हर थाली में पर्याप्त भोजन और हर घर में जरूरी सुविधाएँ हों, तभी बाजार से लौटते थैले के साथ परिवार की आशा भी भरी रहेगी।

चरण 4: निष्कर्ष दोनों विषयों के फ़ीचर मानवीय अनुभव से आरंभ होते हैं, कारणों तथा प्रभावों का क्रमबद्ध चित्रण करते हैं और समाधानपरक, संवेदनशील अंत तक पहुँचते हैं। परीक्षा में चुने हुए एक विषय का पूरा आलेख लिखा जाएगा।

त्वरित सुझाव: फ़ीचर का आरंभ किसी छोटे मानवीय दृश्य से करें; फिर कारण और प्रभाव जोड़ें तथा अंत में उसी दृश्य से जुड़ी आशा या विचार रखें।

7. 'स्वस्थ भारत स्वच्छ भारत' अथवा 'सब पढ़ें सब बढ़ें' विषय पर एक आलेख लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलेख में सामाजिक विषय का विवेचन, उसके कारणों की पहचान और व्यावहारिक उपायों का प्रस्तुतीकरण होता है।
- शीर्षक और लेखक-नाम के बाद भूमिका, विषय-विस्तार तथा सार्थक समापन दिया जाता है। प्रश्न के दोनों वैकल्पिक विषयों के नमूना आलेख नीचे दिए गए हैं।

चरण 1: प्रारूप और विषय-योजना पहले विषय में स्वच्छता तथा स्वास्थ्य के संबंध को स्पष्ट करके व्यक्तिगत और सार्वजनिक स्वच्छता के उपाय लिखेंगे। दूसरे विषय में शिक्षा के व्यक्तिगत तथा सामाजिक लाभ बताएँगे और सबके लिए शिक्षा सुनिश्चित करने के उपाय रखेंगे। दोनों आलेखों की भाषा सरल, क्रमबद्ध और प्रेरक रखनी चाहिए।

चरण 2: पहले विषय पर पूरा आलेख स्वस्थ भारत स्वच्छ भारत

लेखक: एक विद्यार्थी

स्वस्थ नागरिक ही सशक्त राष्ट्र का निर्माण करते हैं। अच्छे स्वास्थ्य के लिए पौष्टिक भोजन और उपचार जितने आवश्यक हैं, उतनी ही आवश्यक स्वच्छता भी है। घर, विद्यालय, सड़क और जलस्रोत स्वच्छ होंगे तो अनेक रोगों से बचा जा सकेगा। इसलिए स्वच्छ भारत का संकल्प स्वस्थ भारत की बुनियाद है।

गंदगी में पनपने वाले मच्छर और दूषित पानी बीमारियाँ फैलाते हैं। खुले में कचरा फेंकना, नालियाँ जाम करना और सार्वजनिक स्थानों को गंदा करना पूरे समाज के स्वास्थ्य को प्रभावित करता है। स्वच्छता की जिम्मेदारी केवल सफाईकर्मियों पर छोड़ देना उचित नहीं है। प्रत्येक नागरिक को इसमें भाग लेना होगा।

हमें गीले और सूखे कचरे को अलग रखना चाहिए। भोजन से पहले हाथ धोना, शौचालय का उपयोग करना और पानी को दूषित होने से बचाना हमारी दैनिक आदतें बनें। विद्यालयों में स्वच्छता संबंधी गतिविधियाँ और मोहल्लों में सामूहिक सफाई अभियान चलाए जा सकते हैं। स्थानीय प्रशासन को कचरे के नियमित संग्रह और सुरक्षित निपटान की व्यवस्था करनी चाहिए।

स्वच्छता किसी एक दिन के अभियान का नाम नहीं, निरंतर निभाया जाने वाला कर्तव्य है। जब नागरिक और प्रशासन साथ मिलकर काम करेंगे, तभी स्वच्छ और स्वस्थ भारत का सपना साकार होगा।

चरण 3: दूसरे विषय पर पूरा आलेख सब पढ़ें सब बढ़ें

लेखक: एक विद्यार्थी

शिक्षा मनुष्य को केवल अक्षर पहचानना नहीं सिखाती; वह उसे सोचने, समझने और सही निर्णय लेने की क्षमता देती है। शिक्षित व्यक्ति अपने अधिकारों के साथ कर्तव्यों को भी समझता है। इसलिए समाज की वास्तविक प्रगति तभी संभव है जब शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति तक पहुँचे।

आज भी गरीबी, सामाजिक भेदभाव, बालश्रम और सुविधाओं की कमी के कारण अनेक बच्चे पढ़ाई से वंचित रह जाते हैं। कुछ परिवार लड़कियों की शिक्षा को पर्याप्त महत्त्व नहीं देते। इससे प्रतिभाएँ दब जाती हैं और असमानता बनी रहती है। हमें समझना होगा कि किसी एक वर्ग की उन्नति से पूरे देश का विकास नहीं हो सकता।

हर बच्चे के लिए निकट और सुगम विद्यालय, प्रशिक्षित शिक्षक तथा आवश्यक पुस्तकें उपलब्ध होनी चाहिए। आर्थिक रूप से कमजोर बच्चों को सहायता मिले और विद्यालय छोड़ चुके बच्चों को फिर पढ़ाई से जोड़ा जाए। लड़कियों तथा विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए सुरक्षित और सहयोगपूर्ण वातावरण बनाया जाए। वयस्क साक्षरता भी उतनी ही जरूरी है।

विद्यार्थी अपने आसपास के जरूरतमंद बच्चों की पढ़ाई में सहायता कर सकते हैं। परिवार, विद्यालय और समाज मिलकर शिक्षा का ऐसा वातावरण बनाएँ जिसमें कोई पीछे न छूटे। सब पढ़ेंगे तो जागरूकता, आत्मनिर्भरता और समान अवसर बढ़ेंगे। यही समावेशी विकास का

सच्चा मार्ग है।

चरण 4: निष्कर्ष स्वच्छता से सामूहिक स्वास्थ्य और सर्वसुलभ शिक्षा से समान अवसर तथा सामाजिक प्रगति का मार्ग खुलता है। दोनों विषयों पर शीर्षक, लेखक-नाम और क्रमबद्ध विचारों सहित आलेख प्रस्तुत हैं।

त्वरित सुझाव: आलेख में समस्या बताकर न रुकें; उससे जुड़े ठोस उपाय और समाज की भागीदारी भी अवश्य लिखें।

---

8. जौं जनतेउँ बन बंधु बिछोहू।
पिता बचन मनतेउँ नहिं ओहू।।
सुत बित नारि भवन परिवारा।
होहिं जाहिं जग बारहिं बारा।।
अस बिचारि जियँ जागहु ताता।
मिलइ न जगत सहोदर भ्राता।।
जथा पंख बिनु खग अति दीना।
मनि बिनु फनि करिबर कर हीना।।
अस मम जिवन बंधु बिनु तोही।
जौं जड़ दैव जिआवै मोही।। [8 अंक]

8(क). राम पिता का वचन नहीं मानें – क्या यह संभव था? फिर वे ऐसा क्यों कह रहे हैं? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में राम का विलाप उनके गहरे भ्रातृप्रेम और शोक की तीव्रता व्यक्त करता है।
- भावावेश में कही गई बात और चरित्र के स्थायी आदर्श में अंतर पहचानना आवश्यक है।

चरण 1: पितृवचन के प्रति राम की निष्ठा राम के लिए पिता के वचन का उल्लंघन करना संभव नहीं था। वे आज्ञाकारी पुत्र और मर्यादा का पालन करने वाले हैं। पिता के वचन की रक्षा के लिए ही उन्होंने वनवास स्वीकार किया था। इसलिए इस कथन को उनके कर्तव्य से सचमुच विमुख होने का निर्णय नहीं समझना चाहिए।

चरण 2: विलाप का भाव समझना लक्ष्मण को मूर्च्छित देखकर राम संभावित भ्रातृवियोग से अत्यंत व्याकुल हैं। इसी शोक में वे कहते हैं कि यदि वन में भाई से बिछुड़ने का पता होता तो पिता का वह वचन न मानते। उनका कथन असहनीय दुख का सहज उद्गार है, जो लक्ष्मण के प्रति उनके अनन्य स्नेह को प्रकट करता है।

चरण 3: निष्कर्ष राम पिता की आज्ञा का उल्लंघन नहीं कर सकते थे। वे लक्ष्मण के वियोग की आशंका से शोकाकुल होकर ऐसा कह रहे हैं; यह उनके प्रगाढ़ भ्रातृप्रेम का भावपूर्ण उद्गार है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में राम की पितृभक्ति और लक्ष्मण के प्रति भ्रातृप्रेम दोनों को जोड़कर कथन का भाव स्पष्ट करें।

8(ख). काव्यांश के आधार पर तुलसीदास के नारी विषयक विचार पर टिप्पणी कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में नारी संबंधी दृष्टि को उसी पंक्ति और उसके प्रसंग के आधार पर समझना चाहिए।
- भ्राता की अनुपम महत्ता बताने के लिए कवि ने अन्य संबंधों और सांसारिक वस्तुओं की तुलना की है।

चरण 1: पंक्ति का संदर्भ तुलसीदास राम के कथन में पुत्र, धन, नारी, घर और परिवार को संसार में बार-बार मिलने वाला बताते हैं। इसके विपरीत सहोदर भाई की प्राप्ति को दुर्लभ कहा गया है। यहाँ नारी को उन सांसारिक संबंधों और संपदाओं के साथ रखा गया है जिनकी पुनः प्राप्ति संभव मानी गई है।

चरण 2: नारी संबंधी दृष्टि पर टिप्पणी इस तुलना में नारी का स्वतंत्र व्यक्तित्व प्रमुख नहीं बनता; उसका महत्त्व पुरुष के जीवन में प्राप्त संबंध के रूप में सामने आता है। यह तत्कालीन पुरुषप्रधान सामाजिक दृष्टि का संकेत है, जिसमें भाई को पत्नी से अधिक अपरिवर्तनीय बताया गया है। फिर भी यह राम के शोकपूर्ण विलाप का प्रसंग है; इसी एक कथन को कवि के समस्त नारी-विषयक चिंतन का पूर्ण विवरण नहीं मानना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश में नारी को पुनः प्राप्त हो सकने वाले सांसारिक संबंधों के साथ रखकर सहोदर भाई की अपेक्षा कम दुर्लभ माना गया है। इससे पुरुषप्रधान दृष्टि झलकती है; कथन का तत्काल प्रसंग राम का तीव्र भ्रातृशोक है।

त्वरित सुझाव: टिप्पणी को दिए गए काव्यांश तक सीमित रखें और तुलना में नारी तथा सहोदर भाई की स्थिति स्पष्ट करें।

8(ग). पक्षी और हाथी का उदाहरण क्यों दिया गया है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उपमा के द्वारा किसी भाव को परिचित उदाहरण से अधिक स्पष्ट और प्रभावशाली बनाया जाता है।
- काव्यांश में आवश्यक अंग से वंचित जीवों की असहायता राम की स्थिति को व्यक्त करती है।

चरण 1: पक्षी और हाथी की स्थिति पंखों के बिना पक्षी उड़ नहीं सकता और अत्यंत दीन हो जाता है। इसी प्रकार सूँड़ के बिना हाथी की स्वाभाविक क्षमता और शक्ति बाधित हो जाती है। पंख पक्षी के लिए और सूँड़ हाथी के लिए अनिवार्य हैं; इनके अभाव में दोनों असहाय और अपूर्ण प्रतीत होते हैं।

चरण 2: राम के जीवन से संबंध राम बताते हैं कि लक्ष्मण के बिना उनका जीवन भी इसी प्रकार दीन, असहाय और निरर्थक हो जाएगा। लक्ष्मण उनके लिए केवल साथ रहने वाले भाई नहीं, जीवन का अत्यंत आवश्यक सहारा हैं। पक्षी और हाथी के सहज समझ में आने वाले उदाहरण उनके वियोग की पीड़ा और राम के गहरे प्रेम को सजीव बना देते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष पक्षी और हाथी के उदाहरण यह बताने के लिए दिए गए हैं कि जैसे वे पंख और सूँड़ के बिना दीन हो जाते हैं, वैसे ही लक्ष्मण के बिना राम का जीवन असहाय और अपूर्ण हो जाएगा।

त्वरित सुझाव: उदाहरणों के अंग पहचानें: पक्षी के पंख और हाथी की सूँड़; फिर उनकी अनिवार्यता को लक्ष्मण से जोड़ें।

8(घ). आशय स्पष्ट कीजिए – 'मिलइ न जगत सहोदर भ्राता।' [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आशय स्पष्ट करने में पंक्ति का सरल अर्थ और प्रसंग में छिपा भाव दोनों बताए जाते हैं।
- सहोदर का अर्थ एक ही माता से जन्मा भाई है; यहाँ उसके संबंध की अद्वितीयता प्रमुख है।

चरण 1: पंक्ति का सरल अर्थ राम कहते हैं कि संसार में सहोदर भाई दोबारा नहीं मिलता। यहाँ आशय यह नहीं कि संसार में भाई होते ही नहीं हैं, बल्कि यह है कि अपने प्रिय सहोदर के खो जाने पर उसके स्थान की पूर्ति नहीं हो सकती। ऐसा रक्त और स्नेह का संबंध अद्वितीय है।

चरण 2: प्रसंग में निहित भाव पुत्र, धन, पत्नी, घर और परिवार की पुनः प्राप्ति संभव बताकर राम भाई के संबंध को सबसे दुर्लभ कह

रहे हैं। वे लक्ष्मण को संबोधित करके जागने की प्रार्थना करते हैं। इस तुलना से लक्ष्मण के प्रति उनका प्रगाढ़ प्रेम, उन्हें खो देने का भय और उनके बिना जीवन की अपूर्णता प्रकट होती है।

चरण 3: निष्कर्ष पंक्ति का आशय है कि सहोदर भाई का स्नेह और साथ अमूल्य तथा अपूरणीय है। अन्य सांसारिक वस्तुएँ और संबंध फिर मिल सकते हैं, पर लक्ष्मण जैसे प्रिय भाई के अभाव की पूर्ति नहीं हो सकती।

त्वरित सुझाव: आशय में केवल शब्दार्थ न लिखें; भाई के संबंध की अपूरणीयता और राम की व्याकुलता भी बताएँ।

अथवा

8. जाने क्या रिश्ता है, जाने क्या नाता है
जितना भी उँड़ेलता हूँ भर-भर फिर आता है
दिल में क्या झरना है?
मीठे पानी का सोता है
भीतर वह, ऊपर तुम
मुसकाता चाँद ज्यों धरती पर रात-भर
मुझ पर त्यों तुम्हारा ही खिलता वह चेहरा है! [8 अंक]

8(क). किसके रिश्ते को कवि समझ नहीं पा रहा है और क्यों? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में कवि अपने और प्रिय के आत्मीय संबंध पर विचार करता है।
- संबंध की गहराई तथा निरंतर बढ़ता स्नेह उसके लिए आश्चर्य का विषय हैं।

चरण 1: संबंध की पहचान कवि अपने और अपने प्रिय के बीच के गहरे स्नेहपूर्ण रिश्ते को पूरी तरह समझ नहीं पा रहा है। उसके मन में प्रिय के प्रति इतना लगाव है कि वह उसके जीवन और भावनाओं में सर्वत्र उपस्थित रहता है। इसीलिए वह कहता है, 'जाने क्या रिश्ता है, जाने क्या नाता है।'

चरण 2: आश्चर्य का कारण कवि जितना अधिक अपने हृदय का प्रेम व्यक्त करता है, उतना ही वह फिर उमड़ आता है। 'जितना भी उँड़ेलता हूँ भर-भर फिर आता है' में स्नेह के इसी अक्षय स्वरूप की अभिव्यक्ति है। सामान्य वस्तुओं की तरह बाँटने से यह प्रेम घटता नहीं है। उसकी असीमता तथा प्रिय का भीतर और बाहर छाया रहना कवि को विस्मित करता है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि अपने और प्रिय के अटूट आत्मीय संबंध को नहीं समझ पा रहा है, क्योंकि प्रेम व्यक्त करने पर भी उसका स्नेह समाप्त नहीं होता, बल्कि फिर भर उठता है।

त्वरित सुझाव: रिश्ता किसका है बताने के बाद प्रेम बाँटने पर उसके फिर भर आने को कारण के रूप में अवश्य लिखें।

8(ख). कवि को क्यों लगता है कि दिल में कोई झरना है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- झरने और सोते का बिंब हृदय में निरंतर उमड़ते स्नेह को व्यक्त करता है।
- अर्थ स्पष्ट करने के लिए 'उँड़ेलता हूँ' और 'भर-भर फिर आता है' को साथ पढ़ना चाहिए।

चरण 1: प्रेम का निरंतर प्रवाह कवि अपने मन का स्नेह जितना भी दूसरों के सामने व्यक्त करता है या प्रिय पर लुटाता है, वह उतना ही फिर भर जाता है। उसके भीतर प्रेम और आत्मीयता की कमी नहीं होती। 'जितना भी उँड़ेलता हूँ भर-भर फिर आता है' इसी अनुभव का सीधा आधार है।

चरण 2: झरने की समानता झरने अथवा पानी के सोते से जल लगातार निकलता रहता है, फिर भी उसका प्रवाह बना रहता है। कवि को अपने हृदय का प्रेम भी ऐसा ही अक्षय और प्रवाहमान लगता है। इसलिए वह हृदय में मीठे पानी का सोता होने की कल्पना करता है। मीठे पानी की मधुरता यहाँ उसके स्नेह की सुखद, निर्मल अनुभूति को भी प्रकट करती है।

चरण 3: निष्कर्ष प्रेम लुटाने पर भी हृदय बार-बार स्नेह से भर जाता है; इसी निरंतरता के कारण कवि को दिल में मीठे पानी का झरना लगता है।

त्वरित सुझाव: झरने का अर्थ वास्तविक पानी न लिखें; उसके लगातार बहने की तुलना हृदय में उमड़ते स्नेह से करें।

8(ग). 'भीतर वह, ऊपर तुम' – 'वह' और 'तुम' कौन हैं? स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सर्वनाम का अर्थ उसके ठीक पहले आए बिंब और आगे के संबोधन से स्पष्ट होता है।
- भीतर का प्रेम और बाहर प्रिय की छवि कवि की एक ही आत्मीय अनुभूति के दो रूप हैं।

चरण 1: वह का संदर्भ 'भीतर वह' में 'वह' कवि के हृदय में बहने वाले मीठे पानी के सोते की ओर संकेत करता है। यह वास्तविक जलस्रोत नहीं, उसके भीतर निरंतर उमड़ते प्रेम और स्नेह का बिंब है। इससे ठीक पहले कवि दिल में झरना और मीठे पानी का सोता होने की बात करता है, इसलिए सर्वनाम का संदर्भ उसी अनुभूति से जुड़ता है।

चरण 2: तुम का संदर्भ 'ऊपर तुम' में 'तुम' कवि के प्रिय अथवा आत्मीय व्यक्ति को संबोधित करता है। प्रिय का प्रभाव उसके बाहरी जीवन पर भी छाया हुआ है। जैसे चाँद धरती पर अपनी चाँदनी फैलाता है, वैसे ही प्रिय का मुसकराता चेहरा कवि पर खिलता रहता है। इस प्रकार भीतर स्नेह का स्रोत है और बाहर प्रिय की मोहक, सुखद उपस्थिति है।

चरण 3: निष्कर्ष 'वह' हृदय में उमड़ते प्रेमरूपी मीठे पानी के सोते को और 'तुम' कवि के प्रिय आत्मीय व्यक्ति को संकेत करता है।

त्वरित सुझाव: वह का संदर्भ पिछली पंक्ति के सोते से जोड़ें और तुम को प्रिय के संबोधन के रूप में स्पष्ट करें।

8(घ). मुसकराते चाँद वाली कल्पना को स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि प्राकृतिक बिंब के माध्यम से प्रिय की सुखद और निरंतर उपस्थिति व्यक्त करता है।
- चाँद तथा प्रिय के मुसकराते चेहरे का संबंध काव्यांश की तुलना से स्पष्ट होता है।

चरण 1: प्रकृति का चित्र रात भर मुसकराता हुआ चाँद धरती पर अपनी शीतल चाँदनी फैलाता है। उसकी उजली, सुखद उपस्थिति धरती को सुंदर और प्रकाशित बना देती है। कवि इसी सहज दृश्य को लेकर अपने मन की आत्मीय अनुभूति समझाता है। यहाँ मुसकराता चाँद प्रसन्नता और शीतलता का बिंब है।

चरण 2: प्रिय की छवि से संबंध जिस तरह चाँद रात भर धरती के ऊपर रहता है, उसी तरह प्रिय का मुसकराता चेहरा कवि पर खिलता रहता है। प्रिय की स्मृति और स्नेह का प्रभाव उसके जीवन को सुख, शांति तथा आत्मीयता से भर देता है। 'मुझ पर त्यों तुम्हारा ही खिलता वह चेहरा है' इस तुलना को स्पष्ट करती है। कवि प्रिय की निरंतर छाई हुई सुखद छवि को चाँद के माध्यम से मूर्त बनाता है।

चरण 3: निष्कर्ष धरती पर रात भर मुसकराते चाँद की तरह प्रिय का चेहरा कवि पर खिलता रहता है और उसके जीवन को स्नेह की सुखद शीतलता से भर देता है।

त्वरित सुझाव: तुलना के दोनों पक्ष लिखें: चाँद के सामने प्रिय का चेहरा और धरती के सामने कवि का अपना जीवन है।

---

9. आँगन में लिए चाँद के टुकड़े को खड़ी
हाथों पे झुलाती है उसे गोद-भरी
रह-रह के हवा में जो लोका देती है
गूँज उठती है खिल-खिलाते बच्चे की हँसी। [6 अंक]

9(क). काव्यांश के वात्सल्य भाव को स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- वात्सल्य भाव माता-पिता के हृदय में संतान के प्रति उमड़ने वाला स्नेह है। यहाँ माँ और शिशु की सहज क्रीड़ा से मातृस्नेह व्यक्त हुआ है।
- माँ की स्नेहमयी क्रियाएँ और उनके प्रत्युत्तर में बच्चे की खिलखिलाहट मिलकर पारिवारिक आनंद का जीवंत चित्र प्रस्तुत करती हैं।

चरण 1: माँ के व्यवहार में स्नेह पहचानिए माँ आँगन में अपने सुंदर, प्यारे बच्चे को गोद में लिए खड़ी है। वह उसे हाथों पर झुलाती है और बार-बार हवा में उछालकर खिलाती है। बच्चे को प्रसन्न करने के लिए की गई ये सहज क्रियाएँ उसके हृदय के दुलार और ममता को प्रकट करती हैं। बच्चे के लिए प्रयुक्त 'चाँद के टुकड़े' का संबोधन भी माँ की स्नेहभरी दृष्टि को उभारता है।

चरण 2: बच्चे की प्रतिक्रिया से वात्सल्य का चित्र पूरा कीजिए माँ के खिलाने पर बच्चा खिलखिलाकर हँस उठता है और उसकी हँसी चारों ओर गूँज जाती है। यह हँसी माँ के स्नेह का आनंदपूर्ण प्रत्युत्तर है। गोद में झुलाना, हवा में उछालना और शिशु की निश्छल हँसी मिलकर ऐसा घरेलू दृश्य बनाते हैं जिसमें माँ का वात्सल्य और बच्चे की प्रसन्नता एक साथ साकार होते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष माँ का बच्चे को गोद में झुलाना और हवा में उछालकर खिलाना उसके ममत्व को व्यक्त करता है। प्रत्युत्तर में बच्चे की खिलखिलाती हँसी इस वात्सल्यपूर्ण दृश्य को सजीव और आनंदमय बनाती है।

त्वरित सुझाव: वात्सल्य समझाते समय माँ की दो क्रियाओं और बच्चे की खिलखिलाहट को जोड़ें; केवल बच्चे की सुंदरता का वर्णन करके उत्तर न रोकें।

9(ख). 'चाँद के टुकड़े को' – अलंकार सौंदर्य स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रूपक अलंकार में उपमेय पर उपमान का सीधा आरोप होता है; दोनों को अलग करके तुलना नहीं की जाती।
- काव्य-सौंदर्य स्पष्ट करते समय अलंकार का नाम बताकर उसका प्रसंग और भावगत प्रभाव भी समझाना चाहिए।

चरण 1: अलंकार की पहचान 'चाँद के टुकड़े को' में रूपक अलंकार है। यहाँ उपमेय नन्हा बच्चा है और उपमान चाँद का टुकड़ा है। कवि ने बच्चे को चाँद के टुकड़े के समान कहने के स्थान पर सीधे चाँद का टुकड़ा कहा है। इस प्रकार बच्चे पर चाँद के टुकड़े का आरोप किया गया है।

चरण 2: अलंकार का सौंदर्य इस प्रयोग से बच्चे की सुंदरता, कोमलता और मनोहर छवि उभरती है। माँ के लिए अपनी गोद का बच्चा अत्यंत प्यारा है। उसे चाँद का टुकड़ा कहना माँ की ममता और बच्चे के प्रति उसके आकर्षण को भी व्यक्त करता है। आँगन में उसे झुलाती माँ का वात्सल्य इस रूपक से और सजीव बनता है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः यहाँ बच्चे पर चाँद के टुकड़े का आरोप होने से रूपक अलंकार है, जो उसके सौंदर्य और माँ के वात्सल्य को प्रभावपूर्ण बनाता है।

त्वरित सुझाव: सीधे चाँद का टुकड़ा कहने पर ध्यान दें; उत्तर में उपमेय, उपमान और उनके अभेद को अवश्य स्पष्ट करें।

9(ग). काव्यांश की भाषा की दो विशेषताएँ लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाषा की विशेषता बताते समय काव्यांश के शब्दों से उसका उदाहरण देना चाहिए।
- बोलचाल के शब्द दृश्य को सहज बनाते हैं और ध्वन्यात्मक शब्द उसके वातावरण को सुनाई देने जैसा प्रभाव देते हैं।

चरण 1: सहज और घरेलू बोलचाल की भाषा काव्यांश की भाषा सरल, स्वाभाविक और बोलचाल के निकट है। 'आँगन', 'हाथों', 'गोद' तथा 'लोका देती है' जैसे प्रयोग घरेलू जीवन और माँ-बच्चे के आत्मीय संबंध को सहज ढंग से व्यक्त करते हैं। कठिन शब्दों के बिना ही माँ के बच्चे को झुलाने और उछालने का दृश्य स्पष्ट हो जाता है।

चरण 2: ध्वन्यात्मकता और लयात्मकता 'खिल-खिलाते' में बच्चे की हँसी की ध्वनि का प्रभाव है। इससे उसकी प्रसन्नता केवल बताई नहीं जाती, बल्कि हँसी मानो सुनाई भी पड़ती है। 'रह-रह' की पुनरुक्ति माँ की बार-बार की क्रिया और पद्य की लय को उभारती है। इस प्रकार भाषा में मधुरता तथा दृश्य को जीवंत बनाने की क्षमता है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश की भाषा की दो प्रमुख विशेषताएँ बोलचाल की सहजता और ध्वन्यात्मक लयात्मकता हैं; दोनों माँ और बच्चे के वात्सल्यपूर्ण दृश्य को सजीव बनाती हैं।

त्वरित सुझाव: भाषा की हर विशेषता के साथ उसी अंश का उदाहरण लिखें; केवल सरल या सुंदर जैसे विशेषण लिखकर न छोड़ें।

अथवा

9. सवेरा हुआ
खरगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा
शरद आया पुलों को पार करते हुए
अपनी नई चमकीली साइकिल तेज चलाते हुए। [6 अंक]

9(क). खरगोश की आँखों से किसकी तुलना की गई है? क्यों? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उपमा में किसी वस्तु के गुण को दूसरी वस्तु के समान बताकर स्पष्ट किया जाता है। यहाँ तुलना का आधार दोनों का लाल रंग है।
- काव्यांश में सुबह का वर्णन दृश्य बिंब के रूप में हुआ है; उत्तर में उपमेय, उपमान और समान गुण की पहचान आवश्यक है।

चरण 1: तुलना की पहचान कवि ने सवेरे की लालिमा की तुलना खरगोश की आँखों से की है। सवेरा उपमेय है और खरगोश की लाल आँखें उपमान हैं। 'खरगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा' पंक्ति इस तुलना का प्रत्यक्ष आधार देती है। यहाँ पूरा सवेरा आँखों के आकार का नहीं बताया गया है; विशेष रूप से उसके लाल रंग की समानता व्यक्त की गई है।

चरण 2: तुलना का कारण प्रातःकाल उगते सूर्य की किरणों से आकाश में लालिमा फैल जाती है। खरगोश की आँखों का लाल रंग इसी सवेरे की लाली का परिचित और सजीव संकेत बनता है। इस समानता से सुबह का रंग पाठक की आँखों के सामने उभर आता है और प्रकृति का दृश्य अधिक आकर्षक बन जाता है। इस प्रकार तुलना रंग की समानता के कारण की गई है।

चरण 3: निष्कर्ष सवेरे की लालिमा की तुलना खरगोश की लाल आँखों से की गई है, क्योंकि दोनों में लाल रंग की समानता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में सवेरा, खरगोश की आँखें और लाल रंग—इन तीनों को स्पष्ट रूप से जोड़कर लिखें।

9(ख). काव्यांश के मानवीकरण को स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मानवीकरण में प्रकृति या किसी अमानवीय सत्ता को मनुष्य के गुण, रूप अथवा क्रियाएँ दी जाती हैं।
- अलंकार की व्याख्या में संबंधित पंक्ति के साथ यह बताना चाहिए कि किस अमानवीय सत्ता को कौन-सी मानवीय क्रिया दी गई है।

चरण 1: मानवीकृत सत्ता पहचानें काव्यांश में शरद ऋतु को मनुष्य के रूप में प्रस्तुत किया गया है। 'शरद आया पुलों को पार करते हुए' में ऋतु का आगमन किसी चलते हुए व्यक्ति के आने जैसा दिखाई देता है। शरद वस्तुतः एक ऋतु है, इसलिए उसका मनुष्य की तरह पुल पार करना कवि की कल्पना है। ऋतु को व्यक्ति की भूमिका देने से उसका आगमन सजीव हो उठता है।

चरण 2: मानवीय क्रियाएँ स्पष्ट करें अगली पंक्ति में शरद अपनी नई चमकीली साइकिल तेज चलाता हुआ आता है। साइकिल रखना, उसे चलाना और पुलों को पार करना मनुष्य की क्रियाएँ हैं। कवि ने ये क्रियाएँ शरद ऋतु को प्रदान की हैं, इसलिए यहाँ मानवीकरण अलंकार है। तेज साइकिल चलाते व्यक्ति की छवि शरद के उत्साहपूर्ण, गतिशील आगमन को भी सामने लाती है।

चरण 3: निष्कर्ष शरद ऋतु को पुल पार करके अपनी नई चमकीली साइकिल तेज चलाते हुए आने वाला मनुष्य बनाया गया है; इसलिए यहाँ मानवीकरण है।

त्वरित सुझाव: मानवीकरण बताते समय शरद को अमानवीय सत्ता और साइकिल चलाने को मानवीय क्रिया के रूप में साथ लिखें।

9(ग). काव्यांश की भाषा की दो विशेषताएँ लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यभाषा की विशेषता बताते समय केवल विशेषण न लिखकर काव्यांश से उसका उदाहरण और प्रभाव भी स्पष्ट करना चाहिए।
- इस अंश की सरल खड़ी बोली और चित्रात्मक, अलंकारयुक्त अभिव्यक्ति उसके भावों को सहज तथा सजीव बनाती है।

चरण 1: सरल एवं सहज भाषा पहली विशेषता यह है कि काव्यांश की भाषा सरल, सहज और बोलचाल की खड़ी बोली है। 'सवेरा', 'आँखों', 'पुलों' और 'साइकिल' जैसे परिचित शब्द प्रयुक्त हुए हैं। इनके अर्थ समझने के लिए कठिन शब्दावली की आवश्यकता नहीं पड़ती। 'नई चमकीली साइकिल' जैसा प्रयोग रोजमर्रा के अनुभव से जुड़कर प्रकृति के वर्णन को आत्मीय और सुबोध बनाता है।

चरण 2: चित्रात्मक एवं अलंकारयुक्त अभिव्यक्ति दूसरी विशेषता भाषा की चित्रात्मकता है, जिसे अलंकारों ने प्रभावशाली बनाया है। 'खरगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा' में उपमा सुबह की लालिमा का दृश्य उपस्थित करती है। शरद का साइकिल चलाते हुए आना मानवीकरण के माध्यम से गति का चित्र बनाता है। इस प्रकार शब्द केवल ऋतु के आने की सूचना नहीं देते, बल्कि रंग और गतिविधि से भरा दृश्य भी रचते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश की दो प्रमुख भाषिक विशेषताएँ हैं—सरल, सहज खड़ी बोली और उपमा-मानवीकरण से समृद्ध चित्रात्मक भाषा।

त्वरित सुझाव: दो विशेषताओं को अलग लिखें और प्रत्येक के साथ इसी काव्यांश का एक स्पष्ट उदाहरण दें।

10(क). 'आत्मपरिचय' कविता में कवि ने अपने जीवन में किन परस्पर विरोधी बातों का सामंजस्य बिठाने की बात की है? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि के व्यक्तित्व को समझने के लिए उसके निजी प्रेम और व्यापक सामाजिक जीवन के संबंध को देखना आवश्यक है।
- विरोधी अनुभवों का सामंजस्य जीवन को उसकी संपूर्णता में स्वीकार करने से बनता है।

चरण 1: संसार और निजी प्रेम का संबंध कवि संसार और जीवन का भार लेकर चलता है, फिर भी उसका हृदय प्रेम से भरा है। सामाजिक उत्तरदायित्व और जीवन की कठिनाइयाँ उसकी प्रेम करने की शक्ति को समाप्त नहीं करतीं। वह संसार से जुड़ा भी है और अपनी स्वतंत्र अनुभूति तथा निजी प्रेम के कारण उससे अलग भी है। इस प्रकार दुनिया का भार और प्रेम का हलकापन उसके भीतर साथ रहते हैं।

चरण 2: दुख और उल्लास की एकता कवि के जीवन में पीड़ा तथा आनंद भी एक साथ हैं। उसके रोदन में राग छिपा है और उसकी शीतल वाणी में भीतर का दाह विद्यमान है। दुख उसके गीत को नष्ट नहीं करता, बल्कि उसी से संगीत और संवेदना जन्म लेते हैं। वह अपने भीतर की जलन तथा बाहर की कोमल अभिव्यक्ति, रोने तथा गाने के बीच सामंजस्य स्थापित करता है।

चरण 3: बंधन और स्वतंत्रता का सामंजस्य कवि प्रेम के बंधन को स्वीकार करते हुए भी अपनी मस्ती और स्वतंत्रता बनाए रखता है। वह संसार की स्वीकृति या आलोचना के अनुसार अपने जीवन का स्वर नहीं बदलता। उसकी निजी दुनिया में प्रेम, संवेदना और स्वच्छंदता साथ हैं। अतः कविता में विरोध का आशय असंगति नहीं, बल्कि अनेक अनुभवों को एक व्यक्तित्व में समेटना है।

चरण 4: निष्कर्ष कवि ने सांसारिक भार और प्रेम, संसार से संबंध और उससे अलगाव, रोदन और गान तथा शीतल वाणी और आंतरिक दाह जैसी विरोधी स्थितियों का अपने जीवन में सामंजस्य स्थापित किया है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में केवल विरोधी शब्द न गिनाएँ; प्रत्येक जोड़े के साथ बताएँ कि वह कवि के व्यक्तित्व में कैसे एक साथ उपस्थित है।

10(ख). 'कविता के बहाने' उसकी उड़ान और उसके खिलने का आशय स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कुँवर नारायण की कविता में चिड़िया और फूल के माध्यम से काव्य की व्यापक संभावनाएँ व्यक्त हुई हैं।
- प्रतीक का अर्थ उसके भौतिक रूप से आगे जाकर कविता की कल्पना, संवेदना और प्रभाव से जुड़ता है।

चरण 1: कविता की उड़ान का आशय कविता की उड़ान से आशय कल्पना की असीम गति और विस्तार से है। चिड़िया आकाश में उड़ती है, पर उसकी उड़ान की भौतिक सीमाएँ हैं। कविता मनुष्य की कल्पना और अनुभूति के सहारे स्थान, समय तथा बाहरी परिस्थितियों की सीमाएँ पार कर सकती है। वह भीतर की दुनिया से बाहर की दुनिया तक पहुँचती है और दूर-दूर के अनुभवों को जोड़ देती है। इसलिए चिड़िया की उड़ान कविता की समूची उड़ान को नहीं समझ सकती।

चरण 2: कविता के खिलने का आशय कविता का खिलना उसकी अनुभूतियों के विकास, सौंदर्य के प्रस्फुटन और आनंद के प्रसार का प्रतीक है। फूल खिलकर सुगंध और सुंदरता फैलाता है, किंतु उसका जीवन निश्चित समय तक रहता है और फिर वह मुरझा जाता है। कविता का सौंदर्य किसी एक ऋतु या फूल के जीवन तक सीमित नहीं है। वह पाठक के मन में बार-बार नए अर्थों और भावों के रूप में खिलती रहती है।

चरण 3: दोनों प्रतीकों की संगति उड़ान में काव्य की कल्पनात्मक व्यापकता और खिलने में उसकी संवेदनात्मक सजीवता सामने आती है। कविता बाहरी दृश्य का केवल अनुकरण नहीं करती; वह अनुभव को नया विस्तार और स्थायी अर्थ देती है। चिड़िया और फूल परिचित उदाहरण हैं, जिनसे कवि स्पष्ट करता है कि काव्य का प्रभाव उनके भौतिक कार्यों से अधिक व्यापक तथा दीर्घजीवी है।

चरण 4: निष्कर्ष कविता की उड़ान असीम कल्पना का और उसका खिलना सौंदर्य, संवेदना तथा आनंद के निरंतर प्रस्फुटन का संकेत है। कविता स्थान और समय की सीमाओं से आगे अपना प्रभाव बनाए रखती है।

त्वरित सुझाव: उड़ान को कल्पना के विस्तार और खिलने को संवेदना के प्रस्फुटन से जोड़ें; चिड़िया तथा फूल की सीमाओं से तुलना अवश्य करें।

10(ग). 'बादल राग' के आधार पर लिखिए कि वज्र गर्जन से कौन त्रस्त होते हैं और क्यों? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निराला की कविता में बादल परिवर्तन और क्रांति के प्रतीक हैं।
- वज्र जैसी गर्जना का प्रभाव सामाजिक वर्गों की स्थिति और हितों के अनुसार भिन्न होता है।

चरण 1: त्रस्त होने वाले वर्ग की पहचान वज्र गर्जन से संपन्न, शोषक और पूँजीपति वर्ग त्रस्त होता है। कविता में ऊँची अट्टालिकाओं के रूप में उस वर्ग की सत्ता और वैभव का संकेत है। उसका सुख दूसरों की मेहनत तथा अभाव पर आधारित है। अतः गर्जना उसके लिए सामान्य वर्षा का प्राकृतिक संगीत नहीं, बल्कि अपने वर्चस्व पर आने वाले संकट की चेतावनी बन जाती है।

चरण 2: भय का कारण बादल की गर्जना क्रांति के जागरण और परिवर्तन की आहट है। शोषक वर्ग को भय है कि शोषित लोग जागेंगे तो अन्यायपूर्ण व्यवस्था और उसके संचित वैभव की सुरक्षा समाप्त होगी। वह अपने सुख-साधनों के बीच रहकर भी आशंकित है। गर्जना उसके मन में छिपे अपराधबोध और असुरक्षा को उभारती है, इसलिए बाहरी संपन्नता उसे निर्भय नहीं बना पाती।

चरण 3: किसान से अंतर स्पष्ट करना इसके विपरीत दुर्बल किसान बादल को आशा से पुकारता है। वर्षा उसकी खेती और जीवन के लिए नई संभावना लाती है, जबकि क्रांतिकारी परिवर्तन उसे शोषण से मुक्ति की आशा देता है। इस विरोध से स्पष्ट होता है कि कविता में गर्जन से सभी मनुष्य भयभीत नहीं होते। भय उन लोगों का है जिनके विशेषाधिकार परिवर्तन से टूट सकते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष वज्र गर्जन से शोषक और संपन्न वर्ग त्रस्त होता है, क्योंकि वह क्रांति का संकेत सुनकर अपनी सत्ता, अन्याय से अर्जित संपत्ति और विशेषाधिकारों के नष्ट होने से डरता है।

त्वरित सुझाव: बादल को क्रांति का प्रतीक मानकर उत्तर दें और भयभीत शोषक वर्ग का आशावान किसान से संक्षिप्त अंतर स्पष्ट करें।

---

11. जैसे मेरे नाम की विशालता मेरे लिए दुर्वह है, वैसे ही लक्ष्मी की समृद्धि भक्तिन के कपाल की कुंचित रेखाओं में नहीं बँध सकी। वैसे तो जीवन में प्रायः सभी को अपने-अपने नाम का विरोधाभास लेकर जीना पड़ता है; पर भक्तिन बहुत समझदार है, क्योंकि वह अपना समृद्धि सूचक नाम किसी को बताती नहीं। केवल जब नौकरी की खोज में आई थी, तब ईमानदारी का परिचय देने के लिए उसने शेष इतिवृत्त के साथ यह भी बता दिया; पर इस प्रार्थना के साथ कि मैं कभी नाम का उपयोग न करूँ। [8 अंक]

11(क). भक्तिन का समृद्धि सूचक नाम क्या था? वह उसे बताना क्यों नहीं चाहती? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में नाम के प्रचलित अर्थ और व्यक्ति की वास्तविक आर्थिक दशा का विरोध दिखाया गया है।
- भक्तिन की नाम छिपाने की इच्छा को उसके आत्मसम्मान और अभावपूर्ण जीवन के संदर्भ में समझना चाहिए।

चरण 1: समृद्धिसूचक नाम बताना भक्तिन का वास्तविक समृद्धिसूचक नाम लछमिन था, जो लक्ष्मी का लोकप्रचलित रूप है। लक्ष्मी का संबंध धन, संपन्नता और ऐश्वर्य से माना जाता है। इसी कारण लेखिका उस नाम को समृद्धि का सूचक कहती हैं। गद्यांश में लक्ष्मी की समृद्धि का उल्लेख नाम के अर्थ को स्पष्ट करता है।

चरण 2: नाम न बताने की इच्छा समझना भक्तिन का वास्तविक जीवन निर्धनता, संघर्ष और अभाव से भरा था। उसके नाम से प्रकट होने वाली संपन्नता उसके जीवन में नहीं थी। वह नाम और दशा के इस विरोधाभास को प्रकट नहीं करना चाहती थी, इसलिए अपना नाम छिपाती थी। नौकरी के लिए आने पर उसने ईमानदारी के कारण नाम बताया, किंतु लेखिका से उसका उपयोग न करने की प्रार्थना की। यह प्रसंग उसके संकोच और स्वाभिमान दोनों को स्पष्ट करता है।

चरण 3: निष्कर्ष भक्तिन का नाम लछमिन अर्थात लक्ष्मी था। निर्धन जीवन और समृद्धिसूचक नाम के विरोधाभास के कारण वह उसे बताना नहीं चाहती थी और लेखिका से भी उसका उपयोग न करने का अनुरोध करती थी।

त्वरित सुझाव: व्यक्ति का वास्तविक नाम लछमिन लिखें और फिर लक्ष्मी के अर्थ तथा भक्तिन की निर्धन दशा के विरोध से कारण स्पष्ट करें।

11(ख). 'मेरे नाम की विशालता मेरे लिए दुर्वह है' – कथन का आशय स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कथन में लेखिका अपने नाम के अर्थ और स्वयं की मानवीय सीमाओं के बीच अंतर बताती हैं।
- दुर्वह का अर्थ है ऐसा भार जिसे वहन करना कठिन हो; यहाँ यह भाव नाम से जुड़ी बड़ी अपेक्षाओं के लिए आया है।

चरण 1: नाम का आशय स्पष्ट करना लेखिका महादेवी वर्मा अपने नाम महादेवी की ओर संकेत करती हैं। इस नाम का अर्थ महान देवी है और इससे असाधारण महानता, गरिमा तथा श्रेष्ठ गुणों का बोध होता है। नाम की विशालता का आशय उसके अक्षरों या आकार से नहीं, बल्कि उससे व्यक्त होने वाले ऊँचे आदर्श और अपेक्षाओं से है।

चरण 2: दुर्वह होने का अर्थ बताना लेखिका विनम्रतापूर्वक मानती हैं कि वे साधारण मानवीय सीमाओं वाली व्यक्ति हैं; अपने नाम में निहित महानता की सभी अपेक्षाओं को निभाना उनके लिए कठिन है। इसीलिए वह विशालता उन्हें भार जैसी लगती है। जैसे भक्तिन के लक्ष्मी-सूचक नाम और निर्धन जीवन में विरोध है, वैसे ही लेखिका अपने नाम के आदर्श और वास्तविक व्यक्तित्व में अंतर अनुभव करती हैं। यह आत्मविनय और हल्के आत्मपरिहास की अभिव्यक्ति है।

चरण 3: निष्कर्ष कथन का आशय है कि महादेवी नाम अत्यधिक महानता और देवी-सदृश गुणों का सूचक है। लेखिका विनम्रतावश स्वयं को उन ऊँची अपेक्षाओं के अनुरूप नहीं मानतीं, इसलिए नाम की महानता को वहन करना कठिन बताती हैं।

त्वरित सुझाव: नाम की विशालता का शाब्दिक आकार न लें; महादेवी के अर्थ और उससे जुड़ी अपेक्षाओं को दुर्वह के भाव से जोड़ें।

11(ग). 'नाम के विरोधाभासों' का आशय सोदाहरण समझाइए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- नाम प्रायः किसी गुण, आदर्श या समृद्धि का बोध कराता है। व्यक्ति की वास्तविक स्थिति उस अर्थ से भिन्न हो तो नाम और जीवन में विरोधाभास होता है।
- गद्यांश में लेखिका और भक्तिन के नामों के अर्थ की तुलना उनकी अनुभूत जीवन-स्थिति से की गई है।

चरण 1: विरोधाभास का आशय नाम के विरोधाभास का अर्थ है कि नाम जिस विशेषता को व्यक्त करता है, वह व्यक्ति के वास्तविक जीवन में दिखाई न दे। नाम सुनकर जिस सुख, वैभव या महानता की कल्पना होती है, जीवन उसके विपरीत भी हो सकता है। यहाँ लेखिका नाम के अर्थ और मनुष्य के यथार्थ के बीच इसी अंतर की ओर संकेत करती हैं।

चरण 2: गद्यांश से उदाहरण भक्तिन का वास्तविक नाम लक्ष्मी है। लक्ष्मी धन और समृद्धि का प्रतीक है, किंतु भक्तिन के जीवन में आर्थिक अभाव है; उसे जीविका के लिए नौकरी खोजनी पड़ती है। इस प्रकार उसका समृद्धिसूचक नाम उसकी वास्तविक स्थिति से मेल नहीं खाता। इसी प्रकार लेखिका महादेवी अपने नाम की विशालता को अपने लिए दुर्वह मानती हैं; नाम से सूचित महानता का भार उन्हें अपने ऊपर बहुत बड़ा लगता है।

चरण 3: निष्कर्ष नाम के अर्थ और वास्तविक जीवन की स्थिति में अंतर ही नाम का विरोधाभास है। धन की प्रतीक लक्ष्मी नाम वाली भक्तिन का अभावग्रस्त जीवन इसका स्पष्ट उदाहरण है।

त्वरित सुझाव: पहले विरोधाभास का अर्थ बताइए, फिर लक्ष्मी नाम के समृद्धिसूचक अर्थ को भक्तिन की वास्तविक आर्थिक स्थिति से जोड़िए।

11(घ). आशय स्पष्ट कीजिए – 'भक्तिन की समृद्धि कपाल की कुंचित रेखाओं में नहीं बँध सकी।' [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कपाल की कुंचित रेखाएँ भाग्य का संकेत हैं; यहाँ इनके द्वारा भक्तिन की जीवन-परिस्थितियों का बोध कराया गया है।
- लक्ष्मी नाम समृद्धि का द्योतक है, पर नाम का अर्थ व्यक्ति के जीवन में अनिवार्य रूप से साकार नहीं होता।

चरण 1: कथन में प्रयुक्त संकेत समझना कपाल अर्थात माथे की कुंचित रेखाओं से यहाँ भक्तिन के भाग्य का संकेत मिलता है। समृद्धि से आशय उसके वास्तविक नाम लक्ष्मी में निहित धन-वैभव के भाव से है। इसलिए यह कथन उसके पास बहुत धन होने की बात नहीं कहता; यह नाम में निहित समृद्धि और जीवन के अभाव के बीच अंतर प्रकट करता है।

चरण 2: भक्तिन के जीवन से आशय स्पष्ट करना भक्तिन का नाम लक्ष्मी था, किंतु उसका जीवन लक्ष्मी के नाम के अनुरूप धन और सुख से संपन्न नहीं हुआ। उसे जीवन-निर्वाह के लिए काम की तलाश में लेखिका के पास आना पड़ा। नाम में व्यक्त वैभव उसके भाग्य और परिस्थितियों में स्थान नहीं पा सका। इसी कारण वह अपना समृद्धिसूचक नाम दूसरों को बताना नहीं चाहती और लेखिका से भी उस नाम का प्रयोग न करने का अनुरोध करती है।

चरण 3: निष्कर्ष कथन का आशय है कि लक्ष्मी नाम होने पर भी भक्तिन के भाग्य में धन-समृद्धि नहीं आई; उसका जीवन आर्थिक अभावों में बीता। नाम की समृद्धि और जीवन की विपन्नता का यही विरोधाभास यहाँ व्यक्त हुआ है।

त्वरित सुझाव: कपाल की रेखाओं को भाग्य तथा लक्ष्मी को समृद्धि से जोड़कर अर्थ खोलिए; कथन को वास्तविक धन होने का संकेत न मानिए।

अथवा

11. अथवा — बाज़ार को सार्थकता भी वही मनुष्य देता है जो जानता है कि वह क्या चाहता है। और जो नहीं जानते कि वे क्या चाहते हैं, अपनी 'पर्चेज़िंग पावर' के गर्व में अपने पैसे से केवल एक विनाशक शक्ति – शैतानी शक्ति, व्यंग्य की शक्ति ही बाज़ार को देते हैं। न तो वे बाज़ार से लाभ उठा सकते हैं, न उस बाज़ार को सच्चा लाभ दे सकते हैं। वे लोग बाज़ार का बाज़ारूपन बढ़ाते हैं। [8 अंक]

11(क). बाज़ार को सार्थकता कौन देता है? कैसे? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में सार्थक खरीदारी का आधार अपनी वास्तविक आवश्यकता का स्पष्ट ज्ञान है।
- बाज़ार तभी उपयोगी बनता है जब ग्राहक और विक्रेता दोनों को उचित लाभ मिले।

चरण 1: सार्थकता देने वाले व्यक्ति की पहचान बाज़ार को सार्थकता वही मनुष्य देता है जो जानता है कि वह क्या चाहता है। उसकी खरीदारी का आधार स्पष्ट आवश्यकता होती है। वह केवल पैसे होने या वस्तुओं की चमक से प्रभावित होकर सामान नहीं खरीदता। गद्यांश का कथन कि वह जानता है कि वह क्या चाहता है, उसके विवेकपूर्ण चुनाव को रेखांकित करता है।

चरण 2: सार्थकता देने की प्रक्रिया ऐसा व्यक्ति अपनी जरूरत की वस्तु खरीदकर उससे वास्तविक लाभ प्राप्त करता है। उसकी खरीद से बाज़ार को भी उचित व्यापार मिलता है। इस प्रकार खरीदना केवल धन का प्रदर्शन नहीं रहता, बल्कि उपयोगी वस्तु और आवश्यकता के बीच संबंध बनाता है। इसके विपरीत अपनी चाह न जानने वाला व्यक्ति न स्वयं लाभ उठा पाता है, न बाज़ार को सच्चा लाभ दे पाता है।

चरण 3: निष्कर्ष अपनी वास्तविक आवश्यकता को जानने वाला विवेकशील मनुष्य बाज़ार को सार्थकता देता है। जरूरत की वस्तु खरीदकर वह स्वयं उपयोगी लाभ पाता है और बाज़ार को भी सच्चा लाभ पहुँचाता है।

त्वरित सुझाव: पहले स्पष्ट आवश्यकता वाले ग्राहक की पहचान लिखें, फिर ग्राहक और बाज़ार दोनों के लाभ से कैसे का उत्तर दें।

11(ख). खरीदने की शक्ति का घमंड बाज़ार को क्या प्रदान करता है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर में क्रयशक्ति के घमंड का परिणाम गद्यांश के स्पष्ट शब्दों से बताना है।
- संपन्नता का प्रदर्शन वास्तविक आवश्यकता पर आधारित खरीदारी को नष्ट कर देता है।

चरण 1: गद्यांश में बताए परिणाम की पहचान खरीदने की शक्ति का घमंड बाज़ार को विनाशक शक्ति प्रदान करता है। लेखक इसे शैतानी शक्ति और व्यंग्य की शक्ति भी कहता है। यह शक्ति उन लोगों के धन से आती है जो अपनी चाह को स्पष्ट नहीं जानते, किंतु अपनी पर्चेज़िंग पावर पर गर्व करते हैं। यहाँ धन का होना नहीं, उसके अहंकारपूर्ण प्रयोग की आलोचना की गई है।

चरण 2: इस शक्ति का दुष्परिणाम स्पष्ट करना क्रयशक्ति के गर्व में खरीदने वाले लोग बाज़ार से उपयोगी लाभ नहीं उठा पाते। वे बाज़ार को भी सच्चा लाभ देने में असमर्थ रहते हैं। उनकी खरीदारी जरूरत पूरी करने के बजाय धन के बल का प्रदर्शन बन जाती है। इसी से बाज़ार का बाज़ारूपन बढ़ता है और उसकी उपयोगी भूमिका कमजोर पड़ती है। अतः विनाशक शक्ति का आशय आवश्यकता और विवेक से दूर करने वाली प्रवृत्ति से है।

चरण 3: निष्कर्ष खरीदने की शक्ति का घमंड बाज़ार को विनाशक, शैतानी और व्यंग्य की शक्ति प्रदान करता है। इससे न ग्राहक को वास्तविक लाभ मिलता है, न बाज़ार को सच्चा लाभ।

त्वरित सुझाव: उत्तर में विनाशक, शैतानी और व्यंग्य की शक्ति लिखकर उसके साथ वास्तविक लाभ के अभाव का परिणाम जोड़ें।

11(ग). 'बाज़ार की सार्थकता' से क्या तात्पर्य है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आशय संबंधी उत्तर में शब्दों के संदर्भगत अर्थ को स्पष्ट करना चाहिए।
- गद्यांश बाज़ार की उपयोगिता को वास्तविक आवश्यकता और पारस्परिक लाभ से जोड़ता है।

चरण 1: सार्थकता का मूल अर्थ स्पष्ट करना बाज़ार की सार्थकता से तात्पर्य उसके उपयोगी उद्देश्य की पूर्ति से है। बाज़ार मनुष्य की वास्तविक आवश्यकताओं की पूर्ति करे और वस्तुओं के उचित लेन-देन का माध्यम बने। केवल अधिक सामान बिकना या धन का प्रदर्शन होना उसकी सच्ची सार्थकता नहीं है। गद्यांश इसीलिए अपनी चाह को जानने वाले व्यक्ति को बाज़ार को अर्थ देने वाला मानता है।

चरण 2: सच्चे लाभ के आधार पर आशय बताना जब ग्राहक अपनी जरूरत समझकर खरीदता है, तब उसे वस्तु से वास्तविक लाभ मिलता है और बाज़ार को भी उचित व्यापार का लाभ प्राप्त होता है। दोनों की उपयोगिता का यह संबंध बाज़ार को सार्थक बनाता है। जो अपनी क्रयशक्ति के घमंड में बिना स्पष्ट आवश्यकता के खरीदते हैं, वे इस संबंध को बिगाड़ते हैं। इसलिए सार्थकता का आधार विवेकपूर्ण उपयोग है, केवल आर्थिक सामर्थ्य नहीं।

चरण 3: निष्कर्ष बाज़ार की सार्थकता का अर्थ है वास्तविक जरूरतों की पूर्ति और उपयोगी लेन-देन द्वारा ग्राहक तथा बाज़ार दोनों को सच्चा लाभ मिलना। इसे आवश्यकता को समझने वाला विवेकशील ग्राहक संभव बनाता है।

त्वरित सुझाव: सार्थकता का अर्थ केवल बिक्री न लिखें; आवश्यकता की पूर्ति और दोनों पक्षों के सच्चे लाभ को जोड़ें।

11(घ). आशय स्पष्ट कीजिए – 'वे लोग बाज़ार का बाज़ारूपन बढ़ाते हैं।' [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आशय स्पष्ट करते समय कथन में आए वे लोग का संदर्भ पहले पहचानना चाहिए।
- बाज़ारूपन यहाँ आवश्यकता से अलग धन और खरीदारी के प्रदर्शन की प्रवृत्ति है।

चरण 1: वे लोग का संदर्भ बताना वे लोग उन ग्राहकों के लिए प्रयुक्त है जो यह नहीं जानते कि उन्हें वास्तव में क्या चाहिए। वे अपनी पर्चेज़िंग पावर अर्थात खरीदने की क्षमता के गर्व में बाजार में जाते हैं। उनकी खरीद का आधार आवश्यकता का स्पष्ट ज्ञान नहीं होता। इसलिए लेखक उन्हें बाज़ार को सच्ची सार्थकता देने वाले विवेकशील ग्राहक से अलग रखता है।

चरण 2: बाज़ारूपन बढ़ाने का अर्थ स्पष्ट करना ऐसे लोग धन के बल और खरीदने के अहंकार को बढ़ावा देते हैं। उनके कारण बाजार उपयोगी आवश्यकताओं की पूर्ति के स्थान पर प्रदर्शन और अनावश्यक खरीदारी का माध्यम बनने लगता है। यही बाजार का बाज़ारूपन बढ़ना है। वे अपनी खरीद से न स्वयं वास्तविक लाभ लेते हैं, न बाजार को सच्चा लाभ देते हैं। लेखक इस कथन द्वारा क्रयशक्ति के विवेकहीन और अहंकारपूर्ण उपयोग की आलोचना करता है।

चरण 3: निष्कर्ष कथन का आशय है कि अपनी जरूरत न समझकर क्रयशक्ति का प्रदर्शन करने वाले ग्राहक बाज़ार में दिखावे और अनावश्यक खरीदारी की प्रवृत्ति बढ़ाते हैं। इससे बाजार की वास्तविक उपयोगिता घटती है।

त्वरित सुझाव: वे लोग का संदर्भ स्पष्ट करके दिखावे और अनावश्यक खरीदारी को बाज़ारूपन से जोड़ें।

12(क). 'काले मेघा पानी दे' के आधार पर लिखिए कि आज कैसी स्थितियों के कारण लेखक को कहना पड़ा – आखिर कब बदलेगी यह स्थिति? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- धर्मवीर भारती का संस्मरण लोकविश्वास और तर्क के साथ सामाजिक उत्तरदायित्व का प्रश्न उठाता है।
- पानी की समस्या के प्रसंग में लेखक योजनाओं की घोषणाओं और जनता तक पहुँचने वाले वास्तविक लाभ के अंतर पर व्यंग्य करते हैं।

चरण 1: विकास योजनाओं और वास्तविकता का अंतर देश की प्रगति और जनता के कल्याण के लिए बड़ी-बड़ी योजनाएँ बनती हैं। उनकी चर्चा होती है और उन पर बहुत धन भी खर्च किया जाता है। फिर भी साधारण जनता की कठिनाइयाँ दूर नहीं होतीं। पानी के लिए लोगों की परेशानी बनी रहती है। अतः लेखक का प्रश्न केवल वर्षा होने या न होने का प्रश्न नहीं, व्यवस्था की निष्फलता का प्रश्न भी है।

चरण 2: भ्रष्टाचार और जनता की वंचना जनता के लिए आने वाली सहायता और धन का बड़ा हिस्सा बीच के स्वार्थी लोगों की जेब में चला जाता है। योजनाओं का लाभ जिन जरूरतमंद लोगों तक पहुँचना चाहिए, वे उससे वंचित रह जाते हैं। सार्वजनिक हित के स्थान पर निजी लाभ को महत्त्व देने की यही स्थिति लेखक को व्यथित करती है। इसलिए वे पूछते हैं कि आखिर यह स्थिति कब बदलेगी। परिवर्तन के लिए धन का ईमानदार उपयोग और समाज के प्रति उत्तरदायित्व आवश्यक है।

चरण 3: निष्कर्ष लेखक का प्रश्न योजनाओं पर भारी व्यय के बावजूद जनता के अभावग्रस्त रहने और बीच में धन हड़प लिए जाने की स्थिति से उपजा है। वे भ्रष्टाचार, स्वार्थ और सार्वजनिक उत्तरदायित्व की कमी से मुक्ति चाहते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में योजनाओं के लिए धन आने, बीच में उसके हड़प लिए जाने और जनता के लाभ से वंचित रहने का संबंध स्पष्ट कीजिए।

12(ख). चार्ली चैप्लिन के जीवन के उन संघर्षों का उल्लेख कीजिए जिनसे जूझते हुए उनका व्यक्तित्व संपन्न बना। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चार्ली का हास्य उनके अपने दुख, अभाव और संघर्ष से गहरा संबंध रखता है।
- लेख में उनके जीवनानुभवों से विकसित करुणा और मानवीय संवेदना के आधार पर व्यक्तित्व का मूल्यांकन किया जाता है।

चरण 1: बचपन का अभाव और पारिवारिक संकट चार्ली का बचपन घोर गरीबी में बीता। पिता से अलग रहने वाली माँ के साथ जीवन में आर्थिक असुरक्षा और भूख का सामना करना पड़ा। माँ का मानसिक स्वास्थ्य बिगड़ना उनके लिए अत्यंत पीड़ादायक अनुभव था। बचपन में ही असहायता और अपमान देखने के कारण वे दुख झेलने वाले सामान्य मनुष्य की पीड़ा को भीतर से समझ सके। इन अनुभवों ने उन्हें केवल दुखी नहीं किया, बल्कि उनकी संवेदना को भी गहरा बनाया।

चरण 2: जीविका का संघर्ष और कलात्मक परिपक्वता कम उम्र से जीविका और रंगमंच के क्षेत्र में अपना स्थान बनाने के लिए चार्ली को संघर्ष करना पड़ा। सामंती और पूँजीवादी समाज के तिरस्कार तथा जीवन की कठोर परिस्थितियों से जूझते हुए उन्होंने अपने अनुभवों को अभिनय में बदला। गरीबी, भूख, अपमान और अकेलेपन को उन्होंने इस तरह प्रस्तुत किया कि दर्शक हँसते हुए भी पात्र के दुख से जुड़ जाते हैं। इस संघर्ष ने उनके व्यक्तित्व में आत्मविश्वास, जिजीविषा, करुणा और साधारण आदमी के प्रति आत्मीयता विकसित की।

चरण 3: निष्कर्ष गरीबी, भूख, पारिवारिक विघटन, माँ की मानसिक बीमारी तथा रोजी और कलात्मक पहचान पाने के संघर्ष ने चार्ली को संवेदनशील और जुझारू बनाया। इन्हीं अनुभवों से उनके हास्य में मानवीय करुणा की गहराई आई।

त्वरित सुझाव: जीवन की कठिनाइयों की सूची के साथ यह भी लिखिए कि उनसे चार्ली में करुणा, जिजीविषा और सामान्य मनुष्य की समझ कैसे बढ़ी।

12(ग). 'शिरीष' को एक 'अद्भुत अवधूत' क्यों कहा गया है? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अवधूत वह है जो सांसारिक मोह और परिस्थितियों के दबाव से मुक्त रहकर मस्त तथा अनासक्त बना रहे।
- हजारीप्रसाद द्विवेदी शिरीष के स्वभाव में विपरीत परिस्थितियों के बीच सहज जीवन, मस्ती और देने की वृत्ति देखते हैं।

चरण 1: भीषण गर्मी में भी सहज उल्लास जब भीषण गर्मी, लू और तपन से अन्य वनस्पतियाँ व्याकुल हो उठती हैं, तब शिरीष हरा-भरा रहकर फूलता है। बाहरी कठिनाइयाँ उसका रस और उल्लास नहीं छीन पातीं। वह प्रतिकूल वातावरण में भी मस्ती से झूमता रहता है। इस प्रकार उसका स्वभाव उस अवधूत जैसा है जो सुख-दुख से विचलित हुए बिना अपनी सहजता और आंतरिक प्रसन्नता बनाए रखता है।

चरण 2: अनासक्ति और कोमल उदारता शिरीष कठोर वातावरण से जूझकर भी संसार को कोमल, सुंदर फूल देता है। वह अपने ऊपर पड़ने वाली तपन का प्रतिशोध कठोरता से नहीं लेता। मानो वह वायुमंडल से अपना जीवन-रस खींचकर निर्लिप्त भाव से जीवित रहता है और अपनी सुंदरता बाँटता है। लेखक को उसमें न किसी वस्तु को पाने की व्याकुलता दिखाई देती है, न परिस्थिति की शिकायत। कठिनाई के बीच ऐसी फक्कड़ मस्ती और अनासक्त उदारता उसके अवधूत रूप को अद्भुत बनाती है।

चरण 3: निष्कर्ष शिरीष को अद्भुत अवधूत इसलिए कहा गया है कि वह भयंकर गर्मी और लू में भी अनासक्त, मस्त और प्रसन्न रहकर कोमल फूल देता है। विपरीत परिस्थितियों पर उसकी सहज जिजीविषा और निर्लिप्त उदारता विजय पाती है।

त्वरित सुझाव: अवधूत का अर्थ बताकर शिरीष की गर्मी सहने, मस्त रहने और कोमल फूल देने की विशेषताओं से उसका संबंध जोड़िए।

12(घ). जाति प्रथा को श्रम-विभाजन का ही रूप न मानने के पीछे डॉ. आंबेडकर के क्या तर्क हैं? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आंबेडकर उपयोगी श्रम-विभाजन और जन्म पर आधारित श्रमिकों के विभाजन में अंतर करते हैं।
- कार्य चुनने की स्वतंत्रता और समान सामाजिक सम्मान स्वस्थ श्रम-व्यवस्था के आधार हैं।

चरण 1: श्रम का नहीं, श्रमिकों का विभाजन डॉ. आंबेडकर के अनुसार जाति-प्रथा केवल कामों का बँटवारा नहीं करती, बल्कि काम करने वालों को जन्म के आधार पर अलग-अलग वर्गों में बाँटती है। इन वर्गों में ऊँच-नीच भी निर्धारित होती है। इसलिए इसे सामान्य श्रम-विभाजन जैसा स्वाभाविक और उपयोगी प्रबंध नहीं माना जा सकता।

चरण 2: योग्यता और स्वतंत्रता की उपेक्षा जाति-प्रथा में व्यक्ति का पेशा उसकी निजी रुचि, क्षमता या प्रशिक्षण के आधार पर तय नहीं होता; उसके माता-पिता की सामाजिक स्थिति उसे निर्धारित करती है। व्यक्ति को अपनी पसंद का काम चुनने की स्वतंत्रता नहीं मिलती। उद्योग और परिस्थितियाँ बदलने पर भी पेशा बदलने का अवसर न मिले तो बेरोजगारी बढ़ती है। थोपा गया काम अरुचि पैदा करता है और कार्यकुशलता घटाता है। श्रम-विभाजन की व्यवस्था समाज की जरूरत के अनुसार बदलनी चाहिए। जाति के कठोर बंधन यह परिवर्तन रोकते हैं और कुछ पेशों को हीन मानकर उनसे जुड़े लोगों के सम्मान को भी चोट पहुँचाते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष अतः जाति-प्रथा असमानता से युक्त, जन्म पर आधारित श्रमिक-विभाजन है। वह स्वतंत्रता, योग्यता और बदलती आर्थिक जरूरतों के विरुद्ध जाती है; इसलिए आंबेडकर उसे केवल श्रम-विभाजन नहीं मानते।

त्वरित सुझाव: उत्तर में तीन भेद स्पष्ट रखें—जन्म बनाम योग्यता, ऊँच-नीच बनाम समान सम्मान और बँधा पेशा बनाम चुनाव की स्वतंत्रता।

12(ङ). 'नमक' कहानी का संदेश स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रजिया सज्जाद ज़हीर की कहानी मानवीय संबंधों को राजनीतिक सीमाओं से अधिक स्थायी दिखाती है।
- नमक स्वाद की वस्तु होने के साथ स्मृति, अपनत्व और साझा सांस्कृतिक जीवन का प्रतीक है।

चरण 1: विस्थापन के बाद भी जीवित अपनत्व कहानी की सिख बीबी विभाजन के बाद भारत में रहती हैं, फिर भी लाहौर को अपना वतन मानती हैं। वे सफिया से लाहौर का नमक लाने का अनुरोध करती हैं। इस छोटी-सी इच्छा में अपने पुराने घर, परिवेश और जीवन से उनका गहरा लगाव व्यक्त होता है। राजनीतिक बँटवारा मनुष्य की स्मृतियों और आत्मीय संबंधों को समाप्त नहीं कर पाता।

चरण 2: सीमाओं के पार मानवीय संवेदना नमक ले जाते समय सफिया का सीमा पर अधिकारियों से संवाद दिखाता है कि दोनों ओर के लोगों के मन में छूटे हुए स्थानों के लिए प्रेम बना हुआ है। नियमों और संदेह के बीच भी वे एक-दूसरे की भावनाओं को समझ सकते हैं। नमक इस साझा मनुष्यता को जोड़ता है। कहानी धर्म और राष्ट्रीयता के नाम पर पैदा की गई दूरी के स्थान पर प्रेम, विश्वास और सहानुभूति को महत्व देती है। सफिया का नमक पहुँचाने का प्रयास बताता है कि दूसरों की छोटी लगने वाली इच्छा का भी भावनात्मक महत्व हो सकता है। संवेदनशील व्यवहार अपरिचित लोगों के बीच भी आत्मीयता पैदा करता है।

चरण 3: निष्कर्ष कहानी का संदेश है कि देशों की सीमाएँ बँट सकती हैं, पर स्मृति, संस्कृति और मानवीय आत्मीयता को बाँटना कठिन है। मनुष्य को संकीर्ण भेदों से ऊपर उठकर दूसरे के दुख और अपनत्व का सम्मान करना चाहिए।

त्वरित सुझाव: संदेश को केवल भारत-पाकिस्तान की मित्रता तक सीमित न करें; सिख बीबी की नमक की इच्छा से स्मृति और साझा मनुष्यता समझाएँ।

13. यशोधर पंत के जीवन से हमें किन जीवन मूल्यों की प्रेरणा मिलती है? समीक्षा कीजिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मनोहर श्याम जोशी की कहानी में यशोधर पंत पुरानी पीढ़ी के संस्कार और बदलते मध्यवर्गीय जीवन के बीच खड़े हैं।
- चरित्र की समीक्षा में उसके अनुकरणीय मूल्यों और व्यवहार की सीमाओं, दोनों का संतुलित विवेचन आवश्यक है।

चरण 1: सादगी, संयम और कर्तव्यनिष्ठा यशोधर पंत का जीवन हमें सादगी तथा संयम की प्रेरणा देता है। वे दिखावे और अनावश्यक खर्च को जीवन की सफलता का मापदंड नहीं मानते। नौकरी और घरेलू दायित्वों के प्रति उनका गंभीर दृष्टिकोण जिम्मेदारी का महत्व बताता है। उनका आचरण सिखाता है कि आर्थिक उन्नति के साथ विवेक और मर्यादा भी जरूरी हैं।

चरण 2: कृतज्ञता और आत्मीय संबंधों का सम्मान उनके व्यक्तित्व पर किशन दा का गहरा प्रभाव है। वे अपने मार्गदर्शक को याद करते हैं और उनसे मिले संस्कारों को महत्व देते हैं। इससे उपकार के प्रति कृतज्ञ रहने, बड़ों का सम्मान करने तथा संबंधों को केवल लाभ-हानि से न आँकने की प्रेरणा मिलती है। आधुनिक सुख-सुविधाओं के बीच भी वे पुराने परिचितों और आत्मीयता का महत्व नहीं भूलते।

चरण 3: परिवार के प्रति उत्तरदायित्व और संवेदनशीलता परिवार की चिंता उनके जीवन का महत्वपूर्ण पक्ष है। बच्चों की बदलती जीवन-पद्धति से असहमत होते हुए भी वे अपने पारिवारिक दायित्वों से पीछे नहीं हटते। पुत्र द्वारा दिए गए ड्रेसिंग गाउन की बात पर वे यह भी चाहते हैं कि पुत्र उन्हें सुबह दूध लाने जाने के बजाय आराम करने को कहे। इस प्रसंग में उनकी अपेक्षा स्पष्ट होती है—भौतिक उपहार के साथ आत्मीय चिंता और देखभाल भी होनी चाहिए।

चरण 4: समीक्षा—मूल्यों के साथ संवाद की आवश्यकता उनकी सादगी और आत्मसम्मान प्रेरक हैं, लेकिन हर नई रीति को संदेह से देखना पीढ़ियों की दूरी बढ़ाता है। विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ के आयोजन से उनकी असहजता भी इसी टकराव को दिखाती है। इसलिए उनसे मूल्यों के प्रति निष्ठा सीखते हुए यह भी समझना चाहिए कि बदलते समय में लचीलापन, संवाद और नई पीढ़ी की भावनाओं की स्वीकृति आवश्यक है।

चरण 5: निष्कर्ष यशोधर पंत से सादगी, कर्तव्यनिष्ठा, कृतज्ञता, आत्मसम्मान और संबंधों में संवेदनशीलता की प्रेरणा मिलती है। उनकी जीवन-दृष्टि का श्रेष्ठ रूप तभी सार्थक होगा जब इन मूल्यों के साथ समयानुकूल उदारता और पारिवारिक संवाद भी जुड़ें।

त्वरित सुझाव: समीक्षा में सादगी और कृतज्ञता के साथ ड्रेसिंग गाउन का प्रसंग जोड़ें तथा अंत में उनकी परिवर्तन-विरोधी प्रवृत्ति की सीमा स्पष्ट करें।

14(क). 'डायरी के पन्ने' के आधार पर पीटर के स्वभाव की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चरित्र-चित्रण में व्यक्ति के गुणों के साथ उसके व्यवहार और संबंधों से मिलने वाला प्रमाण भी प्रस्तुत किया जाता है।
- ऐन की डायरी में पीटर का व्यक्तित्व अज्ञातवास की कठिन परिस्थितियों और ऐन के साथ उसके आत्मीय संबंध के माध्यम से सामने आता है।

चरण 1: सरलता, संकोच और शांत स्वभाव पीटर स्वभाव से सरल, शांत और संकोची युवक है। वह अपनी भावनाओं को सहजता से शब्द नहीं दे पाता। ऐन से निकटता होने पर भी वह अपने मन की हर बात खुलकर नहीं कहता। ऐन और पीटर अतीत, वर्तमान और भविष्य पर बातें करते हैं, किंतु अपने संबंध की सबसे निजी भावना पर सीधे बातचीत करने से हिचकते हैं। उसका यह व्यवहार बताता है कि उसमें आत्मीयता तो है, पर उसे अभिव्यक्त करने का साहस कम है। उसे भावनाशून्य कहना उचित नहीं होगा; उसके संकोच को भी समझना चाहिए।

चरण 2: ईमानदारी और आत्मीयता ऐन पीटर को अच्छा और ईमानदार लड़का मानती है। उसके व्यवहार में बनावट और छल की अपेक्षा सहजता दिखाई देती है। अज्ञातवास के अकेलेपन में उसकी मित्रता ऐन को भावनात्मक सहारा देती है। वह उसके साथ समय बिताता है और दोनों एक-दूसरे के अनुभव साझा करते हैं। इस प्रकार पीटर के भीतर मित्रता निभाने की क्षमता और दूसरों के निकट आने की इच्छा है। उसका स्नेह धीरे-धीरे गहरा होता है; वह अपनी आत्मीयता को प्रायः साथ रहने और बातचीत करने से व्यक्त करता है।

चरण 3: संवेदनशीलता के साथ व्यक्तित्व की सीमाएँ पीटर अपने ऊपर लगाए गए आरोपों को गलत सिद्ध करना चाहता है। इससे उसके आत्मसम्मान और दूसरों की राय के प्रति संवेदनशील होने का पता चलता है। फिर भी ऐन की अपेक्षाओं को वह हर बार पूरा नहीं कर पाता। ऐन को ऐसे साथी की चाह है जो उसके मन की गहराइयों को समझे, जबकि पीटर का संकोच और सीमित अभिव्यक्ति उसे कभी-कभी निराश करते हैं। इसलिए उसके चरित्र का संतुलित मूल्यांकन आवश्यक है: वह स्नेही और सच्चा मित्र है, लेकिन ऐन की सभी भावनात्मक आवश्यकताओं को समझ सकने वाला पूर्ण सहचर नहीं बन पाता।

चरण 4: निष्कर्ष पीटर सरल, ईमानदार, शांत, संकोची और आत्मीय युवक है। ऐन के प्रति उसका स्नेह वास्तविक है, किंतु अपनी भावनाएँ खुलकर न कह पाने और ऐन की अपेक्षाओं को पूरी तरह न समझ पाने की सीमाएँ भी उसके व्यक्तित्व में दिखाई देती हैं।

त्वरित सुझाव: पीटर के प्रत्येक गुण के साथ ऐन से उसकी बातचीत या संबंध का प्रमाण जोड़ें और उसके संकोच को उदासीनता न मानें।

14(ख). 'अतीत में दबे पाँव' के आधार पर सिंधु घाटी सभ्यता की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ओम थानवी का यात्रा-वृत्तांत मुअनजो-दड़ो के अवशेषों के माध्यम से सिंधु सभ्यता के नागरिक जीवन और सांस्कृतिक चेतना को समझता है।
- नगर-योजना, जल-व्यवस्था और दैनिक उपयोग की कलात्मक वस्तुएँ उस सभ्यता की सामाजिक प्राथमिकताओं के प्रमाण हैं।

चरण 1: सुनियोजित नगर और स्वच्छता सिंधु घाटी सभ्यता की प्रमुख विशेषता विकसित नगर-योजना थी। सड़कों और गलियों का सुव्यवस्थित विस्तार, पक्की ईंटों के मकान तथा घरों में स्नान की व्यवस्था उसके उन्नत नागरिक जीवन का परिचय देते हैं। मकान केवल अलग-अलग इमारतें नहीं थे; वे नगर की समग्र योजना से जुड़े हुए थे। ढकी हुई नालियों द्वारा गंदे पानी की निकासी स्वच्छता के प्रति जागरूकता दिखाती है। कुएँ और विशाल स्नानागार जल-संचय तथा सार्वजनिक सुविधाओं के प्रति सजगता के प्रमाण हैं। इससे पता चलता है कि व्यक्तिगत सुविधा के साथ सामूहिक स्वास्थ्य का भी ध्यान रखा जाता था।

चरण 2: विकसित शिल्प और कलात्मक सौंदर्यबोध वहाँ मिली मुहरें, मूर्तियाँ, आभूषण, मिट्टी के बर्तन और खिलौने विकसित शिल्प-कौशल का परिचय देते हैं। छोटी-छोटी वस्तुओं पर बनी सुघड़ आकृतियाँ और बर्तनों पर अंकित चित्र सौंदर्य के प्रति रुचि बताते हैं। कला केवल बड़ी इमारतों या किसी शासक की प्रतिष्ठा तक सीमित नहीं थी; उसका संबंध साधारण मनुष्यों के जीवन और उनकी उपयोग की वस्तुओं से भी था। इसीलिए लेखक इस सभ्यता के सौंदर्यबोध को समाज से पोषण प्राप्त करने वाला मानता है। तकनीकी दक्षता के साथ कलात्मक संवेदनशीलता उसकी विशिष्ट पहचान थी।

चरण 3: आडंबरहीनता और सामाजिक अनुशासन साधन-संपन्न होने पर भी इस सभ्यता में राजसत्ता या धार्मिक सत्ता की विराट भव्यता का वैसा प्रदर्शन नहीं मिलता जैसा बड़े महलों, मंदिरों या राजाओं की विशाल समाधियों में दिखाई देता है। पाठ में वर्णित संग्रहालय की वस्तुओं में दैनिक जीवन की चीजें और औजार प्रमुख हैं; हथियारों का प्रदर्शन नहीं है। लेखक इन संकेतों तथा नगर-व्यवस्था में दिखने वाले अनुशासन के आधार पर समझ से संचालित सामाजिक जीवन की संभावना देखता है। इसे हिंसा या संघर्ष के कभी न होने का निश्चित प्रमाण नहीं कहना चाहिए। उपलब्ध अवशेष नागरिक सुविधाओं, साझी व्यवस्था और संयमित जीवन को विशेष महत्त्व देते दिखाई पड़ते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष सिंधु घाटी सभ्यता सुव्यवस्थित नगरों, उन्नत जल-निकासी, स्वच्छता, कुशल शिल्प, समाज-पोषित कला और आडंबरहीन समृद्धि की सभ्यता थी। उसके अवशेषों में सामान्य नागरिक के जीवन तथा सामूहिक व्यवस्था को मिला महत्त्व विशेष रूप से उभरता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में नगर-योजना, जल-व्यवस्था, कला और आडंबरहीनता के चार आधार लें तथा प्रत्येक के लिए पाठ से एक ठोस उदाहरण दें।